ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक-संरक्षक वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं.श्रीराम शर्मा आचार्य एवं स्नेह सलिला माता भगवती देवी शर्मा

E-mail : news@pragyaabhiyan.info   Website : www.pragyaabhiyan.info   Phone - 09258369725   Fax : 01334-260866

वर्ष-२३, अंक-२४ । १६ जून २०११ । शांतिकुंज, हरिद्वार । वार्षिक चंदा ₹ ३०/-, विदेश में ₹ ४००/-

उत्कृष्टता-आदर्शवादिता संवर्धन

दिव्य अनुदानों के दो प्रयोजन

उच्चस्तरीय अनुदानों का प्रवाह नव–निर्माण के महान् लक्ष्य की पूर्ति के उद्देश्य से प्रवाहित हो रहा है। युग–परिवर्तन की दो निर्धारणाएँ हैं–(1) मनुष्य में देवत्व का उदय (2) धरती पर स्वर्ग का अवतरण। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए जन–जन की मनःस्थिति में उत्कृष्टता का समावेश और परिस्थिति में आदर्शवादिता का समन्वय करना पड़ेगा। यही दो चरण हैं जिन्हें उठाते हुए निर्धारित लक्ष्य तक पहुँचना सम्भव हो सकता है।

युगसृजन का आधार चिन्तन में उत्कृष्टता और व्यवहार में आदर्शवादिता का समावेश करना है। यह दोनों ही कार्य उथले भौतिक दर्शनों के आधार पर चिरस्थायी रूप से सम्पन्न नहीं किये जा सकते हैं। इन्हें लालच से–लुभा कर नहीं, श्रद्धाभरी सद्भावना जगाकर ही सम्पन्न कराया जा सकता है। यह कार्य वस्तुतः धर्म और अध्यात्म का है। भौतिक दर्शन के आधार पर समृद्धि सम्वर्धन में अमेरिका, रूस, जापान, जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रांस आदि कितने ही देश आश्चर्यजनक परिमाण में सफल हुए हैं। इतने पर भी वहाँ सतयुग जैसी मनः स्थिति और परिस्थति बनने के लक्षण कहीं भी दिखाई नहीं पड़ रहे। सर्वविदित है कि शालीनता के अभाव में समृद्धि उपयोगी नहीं रहती, कई बार तो वह दरिद्रता से भी अधिक घातक बन जाती है। सम्पन्नता का अपना महत्त्व है, किन्तु उत्कृष्टता की गरिमा तो उससे भी असंख्य गुनी बड़ी है।

इन समस्त तथ्यों पर विचार करने के उपरान्त युग निर्माण योजना के प्रतिपादनों में सन्निहित दूरदर्शिता और सुख–सम्भावना में सन्देह करने की गुञ्जाइश नहीं रह जाती। प्रस्तुत विभीषिकाओं को सुखद सम्भावनाओं में परिवर्तित करने के लिए वही किया जाना है जो युग सृजन अभियान के द्वारा क्रियान्वित किया जा रहा है।

तर्क और तथ्य की दृष्टि से युगान्तरीय चेतना का समर्थन करने वालों की कमी नहीं, पर कमी उस साहसिकता की है जो इस पुण्य प्रयोजन के लिए कुछ कर सकने का पराक्रम प्रदर्शित कर सकें।.... आदर्श जब उभरते हैं तो विपन्न और व्यस्त लोगों से भी आश्चर्यजनक स्तर के सत्कर्म करा लेते हैं। इसके विपरीत जब अन्तःक्षेत्र सोया रहता है, तो सुयोग्य और सुविधा सम्पन्न भी मनसूबे भर बाँधते हैं, कुछ कर नहीं पाते।........

प्रतिपादनों के क्रियान्वयन के लिए अग्रगमन का साहस करने वाले जाग्रत् आत्माओं पर ही घुमा–फिरा कर वे समस्त उत्तरदायित्व आ जाते हैं, जिनके द्वारा उज्ज्वल भविष्य को प्रत्यक्ष बनाया जाना है। तर्क और तथ्य की दृष्टि से युगान्तरीय चेतना का समर्थन करने वालों की कमी नहीं, पर कमी उस साहसिकता की है जो इस पुण्य प्रयोजन के लिए कुछ कर सकने का पराक्रम प्रदर्शित कर सकें। परिस्थितियाँ असंख्यों की ऐसी हैं जो चाहें तो सरलतापूर्वक युगसृजन के लिए, आत्म कल्याण और विश्व कल्याण के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं, पर मनःस्थिति में विपन्नता भरी रहने के कारण वे बहानेबाजी करते और बगलें झाँकते देखे जाते हैं। आदर्श जब उभरते हैं तो विपन्न और व्यस्त लोगों से भी आश्चर्यजनक स्तर के सत्कर्म करा लेते हैं। इसके विपरीत जब अन्तःक्षेत्र सोया रहता है, तो सुयोग्य और सुविधा सम्पन्न भी मनसूबे भर बाँधते हैं, कुछ कर नहीं पाते।

जाग्रत् आत्माओं में उच्चस्तरीय आत्मबल कैसे जागे? और वे किस प्रकार सच्चे अर्थों में स्वार्थ परमार्थ की साधना करते हुए आत्म सन्तोष एवं ईश्वरीय अनुग्रह के भागी बन सकें? इसका उपाय युग प्रवाह के सूत्र–संचालकों को यह सूझा है कि सत्पात्रों को अतिरिक्त प्राण चेतना का अनुदान दिया जाय और उन्हें बाहर से सामान्य रहते हुए भी भीतर से असामान्य बनाया जाय। शक्ति और प्रगति का मूलभूत आधार अन्तरंग में ही रहता है, इसे सभी विज्ञजन भीली–भाँति जानते हैं।

अनुदान उपलब्ध करना और कराना भी अध्यात्म क्षेत्र की एक महान् परम्परा है। उसे साधनात्मक पुरुषार्थ से कम नहीं वरन् अधिक ही महत्त्व दिया जा सकता है। साधना दीर्घकालीन तपश्चर्या के आधार पर फलित होती है। युगसन्धि की इस पुण्य बेला में उच्च सत्ता ने सत्पात्रों को दिव्य प्रयोजनों के लिए अनुदान वितरण का क्षेत्र और भी अधिक बढ़ा दिया है। अब तक वह नैष्ठिकों के लिए था, अब उसे जाग्रतों के लिए उपलब्ध किया जा रहा है। (वाङ्मय २८/४.२१)

युग निर्माण योजना

आस्तिकता के पुनरूद्धार का आन्दोलन

आज आस्तिकता का असली स्वरूप भुला कर जो अविवेकपूर्ण धारणा हमने अपनाई, उस के कारण हम वस्तुतः ईश्वर से अधिकाधिक दूर होते गये। आस्तिकता के नाम पर हमने दिखावटी पूजा–पाठ का जो भाव अपनाया उससे हमने पाया कुछ नहीं, केवल खोया ही खोया।

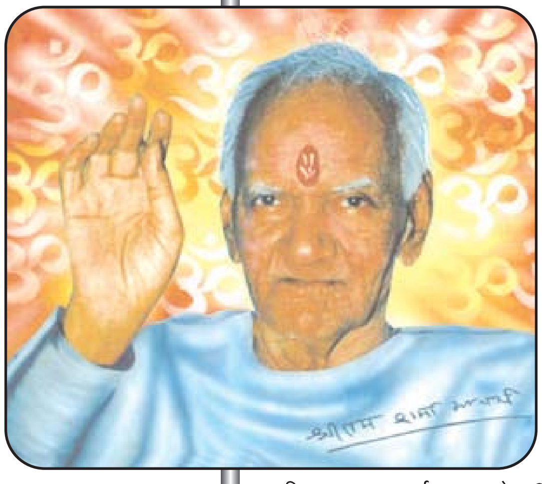

हम यह देख रहे हैं कि पूजा–अर्चना में बहुत धन और समय खर्च करने वाले व्यक्ति भी अपनी अनगढ़ मान्यताओं के कारण चारित्रिक दृष्टि से बहुत गये–गुजरे देखे जाते हैं। मन्दिर झाँकी, भजन–कीर्तन में बहुत उत्साह दिखाने वाले भी गुप्त–प्रकट रूप से बुरी तरह पाप–पंक में डूबे रहते हैं। 'जो कुछ होता है, ईश्वर की इच्छा से ही होता है'–ऐसा मानने वाले आलसी और अकर्मण्य बनकर अपनी हीन स्थिति का दोष ईश्वर को लगाते रहते हैं और प्रगति के लिए प्रतीक्षा करते रहते हैं कि जब कभी ईश्वर की इच्छा हो जाएगी तभी अनायस सब कुछ हो जाएगा। ऐसे लोग अनीति और अत्याचारों को भी ईश्वरेच्छा मानकर चुपचाप सहते रहते हैं। इन्हीं मान्यताओं के आधार पर एक हजार वर्ष तक हम विदेशी आक्रमणकारियों के बर्बर अत्याचार सिर झुकाये सहते रहे। सोमनाथ मंदिर की अपार सम्पति लुटते देखकर हमें भगवान की प्रार्थना करने के सिवाय कर्त्तव्यपालन का कोई अन्य मार्ग न सूझा।

ऐसे विषम समय में तत्वदर्शी लोग भारी पीड़ा अनुभव कर रहे थे कि क्या इन काली घटाओं को चीरकर फिर कभी सच्ची आस्तिकता का सूर्य उदय होगा? यह प्रार्थना ईश्वर ने सुनी और वह दिन फिर सामने आया जिसमें जन साधारण को आस्तिकता का सच्चा स्वरूप समझने का अवसर मिल सके। युग–निर्माण योजना को आस्तिकता के पुनरुद्धार का आन्दोलन ही कहना चाहिए। कहते हैं कि किसी समय नारद जी ने भक्ति का घर–घर प्रचार करने का व्रत लिया था और वे अथक परिश्रम करके सारी पृथ्वी पर अनवरत भ्रमण करते हुए समस्त नर–नारियों को ईश्वर उपासक बनाने में जुट गये। युग–निर्माण–योजना के जन्मदाता ने भी आस्तिकता की प्रेरणा करोड़ों आत्माओं तक पहुँचाई है और २४ लाख से अधिक व्यक्तियों को गायत्री के नैष्ठिक उपासक बनाया है। अब प्रयत्न यही है कि घर–घर में आस्तिकता की आस्था फलती–फूलती नजर आये। युग निर्माण योजना का प्रथम लक्ष्य आस्तिकता का प्रसार करना ही है। समस्त हिन्दू जाति को उसकी संस्कृति के उद्गम केन्द्र से परिचित करने और गायत्री के माध्यम से भावनात्मक एकता उत्पन्न करने के लिए जो प्रयत्न किया जा रहा है, उससे जातीय एकता का एक नवीन अरुणोदय होगा और हम चारों वेदों की जननी महाशक्ति गायत्री के साथ–साथ उसके २४ अक्षरों में सन्निहित अपनी महान् संस्कृति को भी समझ सकेंगे। जातीय उत्कर्ष की दृष्टि से निश्चय ही यह एक बहुत बड़ा काम होगा।

आस्तिकता का सच्चा स्वरूप

युग–निर्माण योजना के अन्तर्गत जिस आस्तिकता का प्रसार किया जा रहा है उसमें जप, तप, हवन, पूजन, भजन, ध्यान, कथा, कीर्तन, तीर्थ, पाठ, व्रत, अनुष्ठान आदि के लिए परिपूर्ण स्थान है पर साथ ही समस्त शक्ति लगा कर हर आस्तिक के मन में यह संस्कार जमाये जा रहे हैं कि–

- ईश्वर को निष्पक्ष, न्यायकारी और घट–घट वासी समझते हुए कुविचारों और दुष्कर्मों से डरें और उनसे बचने का प्रयत्न करें।
- प्रत्येक प्राणी में ईश्वर को समाया हुआ समझकर उसके साथ सज्जनता–पूर्ण सद्व्यवहार किया जाए।
- कर्त्तव्यपालन को ही ईश्वर की प्रसन्नता का सबसे बड़ा उपहार मानें और प्रभु की इस सुरम्य वाटिका–पृथ्वी में अधिकाधिक सुख–शान्ति विकसित करने के लिए एक ईमानदार माली की तरह सचेष्ट बने रहें।
- अपना अन्तःकरण इतना निर्मल और पवित्र बनाया जाए कि उसमें ईश्वर का प्रकाश स्वयमेव झिलमिलाने लगे।
- प्रार्थना केवल सद्बुद्धि, सद्गुण, सद्भावना, सहनशीलता, पुरुषार्थ, धैर्य, साहस और सहिष्णुता के लिए आवश्यक क्षमता प्राप्त करने की ही की जाए।
- परिस्थितियों को सुलझाने और अभावों की पूर्ति के लिए जो साधन हमें मिले हुए हैं, उन्हें ही प्रयोग में लाया जाए और संघर्ष का जीवन हँसते–खेलते बिताते हुए मन को संतुलित रखा जाए।

ये ही सब आस्तिकता के सच्चे लक्षण हैं। युग निर्माण योजना का प्रयत्न यह हैं कि इन लक्षणों से युक्त भक्ति और पूजा की भावना को जन–मानस में स्थान मिले और सच्ची आस्तिकता को अपनाने के लिए मानव मात्र का अन्तःकरण उत्साहित होने लगे।

मनुष्य का कल्याण परमपिता परमात्मा की शरण में जाने से ही हो सकता है। असुरता के चगुंल से छुड़ाकर देवत्व की ओर अग्रसर होने की प्रवृत्ति ही साधना कहलाती है। साधना से हमारा जीवन सुव्यवस्थित और सुसंस्कृत भी बनता जाता है, पर यह तभी सम्भव होता है, जब हम जड़–विज्ञान तथा स्वार्थपूर्ण दिखावटी आस्तिकता से बचकर सच्चे स्वरूप में ईश्वर की उपासना करें। युग निर्माण योजना मानव मात्र के हृदय में सच्ची आस्तिकता उत्पन्न करके उनका हित साधन करने के लिए ही चलाई गई है।

–वाङ्मय ६६–२–५७,५८,५९

गुरुपर्व पर गुरु अनुशासनों के प्रकाश में करें श्रेष्ठतर व्यक्तित्व गठन के संकल्प

श्रावणी पर्व तक विशेष अभियानों को गतिशील बनाने के लिए करें प्रखर पुरुषार्थ

गुरु की प्रसन्नता के लिए

प्रत्येक शिष्य यह चाहता है कि उसे गुरु की प्रसन्नता, कृपा का विशेष लाभ प्राप्त हो। जीवन की लौकिक एवं आध्यात्मिक प्रगति के क्रम में साधक के पुरुषार्थ के साथ गुरु के अनुग्रह का भी असाधारण महत्त्व है। यदि शिष्य के पुरुषार्थ एवं गुरु के अनुग्रह का सुसंयोग बैठ सके, तो जीवन के अलभ्य लाभ भी सहज ही प्राप्त किये जा सकते हैं। श्रीमद् भागवद्गीता के अंतिम श्लोक में गीताकार ने अपना मत कुछ इस प्रकार व्यक्त किया है...

जहाँ योगेश्वर कृष्ण तथा पुरुषार्थी पार्थ की क्षमताओं का संयोग बनता है, वहीं पर श्री, विजय, विभूति आदि रहती है, यह ध्रुव नीति भी है और मेरा मत भी यही है।

यों अर्जुन एवं श्रीकृष्ण के बीच अनेक रिश्ते हैं, किंतु गीता में उनका शिष्य एवं गुरु का ही स्वरूप विशेष रूप से उभरा है। मोहग्रस्त अर्जुन असमंजस के निवारण के लिए उनसे कहते हैं, ''मैं आपका शरणागत शिष्य हूँ, आप मेरा मार्गदर्शन करें।'' कृष्ण उन्हें अपने स्वरूप का बोध कराते हैं और अपने अनुशासनों के बेहतर अनुपालन की प्रेरणा देते हैं। अर्जुन उनका अनुगमन करते हैं और महाभारत विजय का श्रेय प्राप्त करते हैं।

महाभारत जीतने की इच्छा तो दुर्योधन की भी थी। कृष्ण को प्रसन्न करने के प्रत्यक्ष उपचार, स्वागत-सम्मान करने में तो वह भी पीछे नहीं था। शक्ति साधन भी उसके पास अर्जुन से कम नहीं थे, किंतु कृष्ण का अनुग्रह पाने की साधना में वह पिछड़ गया और हार गया।

दोनों के प्रयासों में मूल अंतर प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। दुर्योधन अपने व्यक्तित्व को कृष्ण के अनुसार सुधारे-निखारे बिना, अपने संसाधनों से उन्हें प्रसन्न करना चाहता है और अर्जुन उनके अनुशासनों को स्वीकार करके अपने परिष्कृत व्यक्तित्व से उन्हें समर्पित करने की सफल साधना करता है।

यही है समर्थ गुरुसत्ता की वास्तविक प्रसन्नता पाने-प्राप्त करने का मूलमंत्र। हमें इसी के अनुसार स्वयं को तैयार करना चाहिए। हमने उनके कार्य करने के लिए क्या-क्या स्थूल प्रयास किये, कितने साधन लगाये, यह ब्यौरा काफी नहीं है। उन्हें चाहिए महाभारत की अगली चुनौतियों को पार करने के लिए पहले से बेहतर परिष्कृत व्यक्तित्व।

युगऋषि के जन्म शताब्दी वर्ष की गुरुपूर्णिमा पर उनसे जुड़े प्रत्येक नैष्ठिक साधक को चाहिए कि अर्जुन की तरह आत्म सम्मोहन से उबरकर युग निर्माण के अगले मोर्चों के अनरूप अपने व्यक्तित्व को निखारने-सँवारने तथा समर्पित करने के लिए प्रखर आध्यात्मिक पुरुषार्थ करे। गुरुदेव ने 'अपने अंग-अवयवों से' नामक पत्रक में भी यही रहस्य खोला है। वे लिखते हैं -

ऊँचे काम सदा ऊँचे व्यक्ति करते हैं। कोई लम्बाई से ऊँचा नहीं होता; श्रम, मनोयोग, त्याग और निरहंकारिता ही किसी को ऊँचा बनाते हैं। अगला कार्यक्रम ऊँचा है, आपकी ऊँचाई उससे कम न पड़ने पाये, यह एक ही आशा-अपेक्षा और विश्वास आप लोगों पर रखकर कदम बढ़ रहे हैं।

गुरुसत्ता का स्पष्ट निर्देश है कि आगे के कार्यों के अनुरूप हमारे श्रम, मनोयोग, त्याग और निरहंकारिता का स्तर बढ़ता रहना जरूरी है। पर्व के स्थूल कार्यक्रमों के बीच हमारे सूक्ष्म पुरुषार्थ इसी स्तर के होने चाहिए।

प्रत्यक्ष कार्यक्रम

इस बार गुरुपूर्णिमा १५ जुलाई-शुक्रवार के दिन है। गायत्री जयंती की तरह गुरुपूर्णिमा कार्यक्रम को भी तीन दिवसीय (१५, १६, १७ जुलाई) करने का निर्धारण हुआ है। गायत्री जयंती पर गायत्री विद्या के सार्वभौम स्वरूप के विस्तार का लक्ष्य रखा गया था। उसी प्रकार गुरुपूर्णिमा पर गुरुसत्ता की साक्षी में १-व्यक्तित्व परिष्कार के संकल्प तथा २- हरीतिमा संवर्धन के संकल्पों को क्रियान्वित करने की शुरुआत की जाये। केन्द्र तथा क्षेत्र के लिए प्रत्यक्ष कार्यक्रमों की रूपरेखा इस प्रकार है।

१-केन्द्र (शांतिकुंज)-

दिनांक १४ की शाम से २४ घण्टे का अखण्ड जप १५ की शाम तक चलेगा।

दिनांक १५ को प्रात: गुरुपर्व पूजन, यज्ञ आदि का क्रम। शाम को प्रत्यक्ष अभियान को गति देने के सुनिश्चित संकल्पों के साथ दीपयज्ञ।

दिनांक १६ को नैष्ठिकों को जाग्रत् करने, हरीतिमा संवर्धन के लिए चलाये जाने वाले कार्यक्रमों पर विभिन्न गोष्ठियाँ। वृक्षारोपण के लिए सुनिश्चित तैयारियाँ।

दिनांक १७ शांतिकुंज, श्रीरामपुरम् तथा गायत्री कुंज परिसर में पूर्व निर्धारित तैयारी के अनुसार कम से कम ५०० वृक्षों का आरोपण। उनके संरक्षण-पोषण की व्यवस्था।

२-क्षेत्र के लिए

दिनांक १४ एवं १५ के कार्यक्रम क्षेत्रीय आवश्यकता के अनुरूप केन्द्र की तरह ही किये जायेंगे।

दिनांक १६ को अपनी विभिन्न संगठित इकाइयाँ श्रावणी तक नैष्ठिक साधकों के १-व्यक्तित्व परिष्कार तथा २-वृक्षारोपण के संकल्पों को मूर्तरूप देने के लिए कार्ययोजना बनायें।

दिनांक १७ को वृक्षारोपण अभियान की शुरुआत करें। उस दिन निर्धारित स्थानों पर समारोह पूर्वक वृक्षारोपण कराया जाये। इसके लिए जमीन उपलब्ध कराने के लिए संबंधित व्यक्तियों से पूर्व संपर्क करें।

इसके लिए विभिन्न संगठनों को भी तैयार किया जाये कि वे भी अपनी गुरुसत्ता की साक्षी में परिष्कृत व्यक्तित्व गढ़ने तथा वृक्षारोपण करने-कराने के अभियान चलायें। इसके लिए पूर्व तैयारी अभी से प्रारंभ की जाये।

पूर्व तैयारी-पर्व प्रयाज

इस गुरुपर्व पर पूर्वोक्त दो कार्यक्रमों को प्रधानता दी जा रही है। १-गुरुसत्ता का दिव्य बोध उनके निर्धारित अनुशासनों के रूप में किया, कराया जाये। पहले से बेहतर अनुशासित जीवन उनके श्रीचरणों में समर्पित करने के सुनिश्चित संकल्प किये-कराये जायें।

ध्यान रहे, युगऋषि ने कहा है कि इस समय सूक्ष्म जगत में राष्ट्रपति शासन जैसी स्थिति चल रही है। सभी सिद्ध संत की आत्माएँ एकजुट होकर ईश्वरीय योजना को सफलता पूर्वक लागू करने के लिए सक्रिय हैं। उन सबका ध्यान इसी बात पर केन्द्रित है कि नवयुग के अनुरूप व्यक्तित्वों को गढ़ा जाये। उस दिशा में संकल्प पूर्वक सुनिश्चित प्रयास करने वाले सुपात्रों को उपयुक्त दिव्य अनुदान देकर अग्रदूतों की श्रेणी में लाया जाये। किसी भी मत-धर्म-संप्रदाय के व्यक्ति, अपनी श्रद्धा के अनुरूप गुरुसत्ता की साक्षी में विवेकपूर्ण संकल्प पूर्वक प्रयास करेंगे तो बिना किसी भेदभाव के उन्हें दिव्य अनुदान मिलेंगे। इस जन्म में अग्रदूतों का श्रेय-सौभाग्य पाते हुए वे कई जन्मों तक इसका लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

इसलिए अपने संगठन के साथ-साथ अन्य संगठनों को भी युगधर्म का बोध कराने तथा किसी भी नाम या कर्मकाण्ड विशेष के आग्रह से ऊपर उठकर विवेकपूर्ण सार्थक पहल करने के लिए प्रेरित-सहमत किया जाये। कार्य कठिन लगता भले ही है, किन्तु ईमानदारी से प्रयास करने वालों को ऋषितंत्र के संरक्षण में उल्लेखनीय सफलताएँ मिलना निश्चित है। उन्हें भी उक्त संकल्प के साथ गुरुपर्व मनाने के लिए पहले से प्रेरित किया जाये। जो सहमत हों, उन्हें पर्व योजना के अनुरूप सक्रियता बरतने में सहयोग दिया जाये।

२-वृक्षगंगा अभियान : सभी संगठनों को अपने-अपने शक्ति संसाधनों के अनुरूप गुरुपर्व से श्रावणी तक विशेष रूप से वृक्षगंगा अभियान अपने ढंग से चलाने के लिए प्रेरित किया जाये।

सभी अपनी गुरुसत्ता की साक्षी में संकल्प करें कि गुरु की स्मृति में, अपने पुरखों, पुत्र-प्रियजनों की स्मृति में अमुक संख्या में वृक्षारोपण करेंगे तथा उनके पोषण-संरक्षण की व्यवस्था बनायेंगे।

वृक्ष कहाँ और कैसे लगायें?

* अपनी व्यक्तिगत भूमि में उपयुक्त स्थलों पर
* आवासों के निकट पार्कों व मार्गों के किनारे।
* गाँवों की बंजर एवं गोचर भूमि में।
* स्कूलों, कार्यालयों, फैक्टरियों आदि के परिसरों में
* ग्राम पंचायत एवं वन विभाग द्वारा उपलब्ध करायी गयी भूमि पर।
* देवालयों एवं आश्रमों की भूमि पर पवित्र स्थायी वृक्षों का आरोपण।
* श्मशान घाट पर धार्मिक महत्त्व के वृक्षों का आरोपण।
* विभिन्न धार्मिक स्थलों के परिसरों में उनकी आस्था के अनुरूप वृक्षों का आरोपण।

इसके लिए उदार एवं समर्थ व्यक्तियों के सहयोग से पौध तैयार कराने, वृक्षों के लिए सुरक्षा घेरे तैयार कराने, सिंचाई के संसाधन जुटाने जैसी व्यवस्थाएँ थोड़े प्रयास से ही की जा सकती हैं। अनेक बैंक, ईको क्लब, नगर निगम, एनटीपीसी, ओएनजीसी जैसी कंपनियों के पास भी इसके लिए पर्याप्त फण्ड होते हैं।

तरुपुत्र, तरुमित्र बनें-बनायें

भारत धर्मप्राण देश है। यहाँ परोपकार से पुण्य प्राप्ति की भावना काफी प्रबल है। उसका सार्थक उपयोग वृक्षारोपण से पर्यावरण संरक्षण जैसे पवित्र कार्य के लिए भी किया जा सकता है।

यह मान्यता है कि यदि कोई व्यक्ति परमार्थी पुत्र या मित्र को विकसित करने में सफल होता है तो उस (पुत्र या मित्र) के द्वारा किये गये पुण्य कार्यों में उस व्यक्ति को भी भागीदारी मिलती है।

शास्त्रकारों ने तो एक वृक्ष को दस पुत्रों जितना पुण्यदायी कहा है -

दश कूप समो वापी, दश वापी समो ह्रदः।
दश ह्रद समः पुत्रः दश पुत्र समो द्रुमः॥

भावार्थ :- दस कुओं के समान एक वापी (बावड़ी) होती है। दस वापियों के समान एक सरोवर होता है। दस सरोवरों के समान एक पुत्र का महत्त्व है। इसी प्रकार दस पुत्रों के समान एक वृक्ष लगाना पुण्यदायी होता है।

व्यक्ति के रूप में पुत्र या मित्र कितना पुण्य करेंगे, इस पर संदेह भी किया जा सकता है, किंतु पुत्र या मित्र की तरह किसी वृक्ष को विकसित कर दिया जाये, तो उसके द्वारा किये जाने वाले असाधारण पुण्य-परमार्थ पर कोई शंका नहीं रह जाती। उसे तो प्राणवायु उत्सर्जन, प्रदूषण सोखने, जीवों को छाया, आहार-विश्राम व फल-फूल देने, वर्षा में सहयोगी बनने, भूमि-जल संरक्षण में सहयोग देने जैसे पुण्य कार्य करने ही हैं। वृक्ष को लगाने, उसे संरक्षण एवं पोषण देने वालों को उनके पुण्य के अंश में भागीदारी सुनिश्चित रूप से मिलने वाली है।

व्यापक प्रयोग करें

एक वैज्ञानिक अध्ययन के अनुसार औसतन एक वृक्ष द्वारा किए गये सेवाकार्यों का आर्थिक मूल्यांकन (५० वर्षों में) एक करोड़ से अधिक होता है। आँकड़े इस प्रकार हैं :-

१. प्राणवायु	₹ १५,००,०००
२. वायु प्रदूषण नियंत्रण एवं भूमि की उत्पादकता वृद्धि	₹ ३१,००,०००
३. भूमिक्षरण नियंत्रण	₹ १५,६०,०००
४. जल संरक्षण	₹ १८,८०,०००
५. पशु पक्षियों का आश्रय	₹ १६,६०,०००
६. काष्ठ, फल, चारा	₹ ४,००,०००
कुल	₹ १,०१,००,०००

यह तो अर्थविदों की एक स्थूल गणना है, किंतु किसी प्यासे के प्राण बचाने वाले एक ग्लास पानी का मूल्य पैसों में नहीं आँका जा सकता। इसी प्रकार धरती और धरतीवासियों के प्राणरक्षक वृक्षों की सेवा का आर्थिक मूल्यांकन भर करना, मानवीय संवेदनाओं की अवमानना करने जैसा ही कहा जा सकता है।

व्यक्तिगत स्तर पर तथा विभिन्न संगठनों, संस्थानों के स्तर पर लोगों को इसके लिए तैयार किया जाये कि वे अमुक संख्या में वृक्षों को पुत्रों या मित्रों की तरह विकसित करेंगे। इसके लिए उन्हें उनकी आस्था के अनुरूप विधि-विधान पूर्वक संकल्प कराये जा सकते हैं। प्रत्येक संगठन को संकल्पकर्त्ताओं के रिकॉर्ड रखने, संरक्षण एवं प्रोत्साहन की व्यवस्था बनाने के लिए जिम्मेदारी से खड़ा किया जाये। उसका श्रेय-सम्मान उन्हीं को मिलने दिया जाये।

वृक्षारोपण के लिए गुरुपूर्णिमा से श्रावणी तक का समय प्राकृतिक ढंग से बहुत अनुकूल होता है। लक्ष्य पूरा न होने पर उसे और भी कुछ समय बाद तक चलाया जा सकता है।

संकल्पित व्यक्तियों को स्मृति रूप में कलावा (संकल्प सूत्र) बाँधा जाये। उनसे वरण किये गये वृक्ष को कलावा बँधवाया जाये। कम से कम एक-दो वर्ष तक उसकी विशेष देखभाल करने की जिम्मेदारी सौंपी जाये।

इस आधार पर यदि सृजन सैनिक गुरुपर्व पर दोनों प्रमुख कार्यक्रमों को अपने संगठन के साथ अन्य संगठनों में भी लागू करा सकें, तो क्रांति की एक नयी लहर पैदा की जा सकती है। युगऋषि सहित ऋषिसत्ता को तो इससे प्रसन्नता होगी ही, नवसृजन के लिए सहगमन के एक नये प्राणवान क्रम का सूत्रपात भी हो सकेगा।

कायर केवल नीति की बातें करते हैं, बहादुर उसकी रक्षा के लिए मर-मिटते हैं।

मुस्करा उठे सैकड़ों वृक्ष

श्रमशीलता-सहकारिता के अद्‌भुत आनंद की अनुभूतियाँ कर रहे हैं तरु सेवक

परम पूज्य गुरुदेव ने गायत्री मंत्र की व्याख्या करते हुए उसे साहस, विवेक, श्रमशीलता, सहकारिता, सद्भाव जैसे अनेकानेक गुणों का समुच्चय बताया है। सच्चा गायत्री उपासक वही है, जो इन गुणों को जीवन में अपनाते हुए

आनंदमय जीवन जीता है। इन १५ दिनों में आपने अपनी श्रम की सामर्थ्य को पहचानते हुए जिस आनंद की अनुभूति की है, वह अद्‌भुत है, सभी के लिए प्रेरणादायी है। श्रमशीलता एवं सहकारिता का यह अभ्यास निरंतर बना रहे, ऐसे प्रयास करने चाहिए।

शांतिकुंज व्यवस्थापक आद. श्री गौरीशंकर शर्मा जी ने तरु-सेवकों द्वारा किये गये कार्यों का निरीक्षण करते हुए यह बात कही। उल्लेखनीय है कि शांतिकुंज के शताधिक स्वयं सेवकों ने १५ मई को आदरणीया शैल जीजी के समक्ष देव संस्कृति विश्वविद्यालय में विद्यमान ५०० से अधिक वृक्षों का संरक्षण, पोषण एवं विकास करने का संकल्प लिया था। १५ दिन के अथक परिश्रम से इन स्वयं सेवकों ने जो कार्य किया है वह अद्‌भुत है, अद्वितीय है।

इन १५ दिनों में तरु-सेवकों ने आम के लगभग ३०० पेड़ों के चारों ओर चार मीटर व्यास वाले दो-दो फीट गहरे गड्ढे खोदकर उनके बड़े सुंदर थाँवले बनाये हैं। इनमें खाद डालने और ट्रैक्टर-टेंकर से ले जाकर दो-तीन बार पानी देने का कार्य भी किया। उल्लेखनीय है कि यह सारा कार्य दैनिक कार्यों में बिना किसी व्यवधान के मात्र प्रात:काल ५ से ८ बजे के बीच किया जाता है। प्रत्येक तरु-सेवक मात्र एक से डेढ़ घंटे के श्रम से इतनी बड़ी योजना को अंजाम देकर अत्यंत हर्षित है, कार्य पर नियमित उपस्थिति इसका प्रमाण है। न केवल थाँवले बनाये गये, बल्कि उसके चारों ओर स्वच्छता, सुव्यवस्था का ध्यान उनके मनोयोग को प्रमाणित करता है।

प्रत्येक रविवार के दिन सामूहिक श्रमदान होता है, बहिनें और बच्चे झाड़ू, सफाई, लिपाई, सिंचाई जैसे कार्य बड़ी लगन से करती हैं। वे घर से अपना तथा दो-चार अन्य साथियों का भोजन भी लाती हैं। सामूहिक भोज और वनविहार का जो आनंद तरु-सेवक योजना में मिलता है, वह अविस्मरणीय है।

उत्साहवर्धक अभिव्यक्तियाँ

- इतना कार्य यदि ठेके पर कराया जाता तो उसकी कीमत ६०-७० हजार रुपयों से कम नहीं होती।
- स्वयंसेवक वृत्ति के साथ जो काम हुआ है, वह एक मजदूर की तुलना में तीन-चार गुना है।
- ऐसे अभियान यदि गाँव-गाँव चल पड़ें तो गाँव की अनेक समस्याओं का समाधान ग्रामीण स्वयं कर सकते हैं।
- पू. गुरुदेव कहते थे कि जब मन काम से ऊब जाये, तो विश्राम की न सोचो, काम बदल लो। इसकी सार्थकता इस अभियान में दिखाई दी।
- सामूहिक श्रमदान का यह क्रम उन लोगों के लिए बेहद लाभदायक है, जो दिनभर कुर्सी पर बैठकर ही काम करते हैं।
- इस तरह के अभियान से अलग से भ्रमण, विशेष योग-व्यायाम के तमाम लाभ स्वत: ही मिल जाते हैं।
- इसमें शारीरिक और मानसिक दोनों तरह के स्वास्थ्य लाभ मिलते हैं।

तरु सेवकों की अनुभूतियाँ

- कमरदर्द बरसों से था, लेकिन फावड़ा जो चला कि दर्द खत्म हो गया। जहाँ हजारों की दवाइयाँ काम न आ पायीं, वहाँ फावड़ा काम आया।
- कंधे की जकड़न से परेशान था। रोज मालिश करता था, औषधियाँ खाता था लेकिन जकड़न नहीं जा रही थी। रोज थोड़ा-थोड़ा फावड़ा चलाया तो जकड़न कम होने लगी, अब बिलकुल गायब है।
- प्रात:काल की दिनचर्या व्यवस्थित हो गयी।
- श्रम से पसीना निकला तो आंतरिक विकार दूर हुए, अपने आप बीपी पर नियंत्रण होने लगा।
- रात को अच्छी तरह नींद नहीं आती थी। अब सोता हूँ तो इतनी गहरी नींद आती है कि कब सवेरा हो गया, पता ही नहीं चलता।
- कई भाइयों ने कहा कि प्रात:काल श्रम के साथ जो स्वस्थ हास परिहास होता है उससे मानसिक तनाव से मुक्ति मिल गयी है।

वृक्षारोपण के लिए समर्पित जीवन

अपनी पेंशन से पालते हैं वृक्षों को

अकोला (महाराष्ट्र)

७२ वर्षीय अकोला निवासी श्री रामचंद्र सूर्यभान घाटे इन दिनों अपने क्षेत्र में हरित ऋषि के रूप में लोकप्रिय हो रहे हैं। सेवा निवृत्ति के बाद पर्यावरण संरक्षण के लिए उनके द्वारा की गयी सेवाएँ हर नागरिक के लिए एक आदर्श है। बड़ी उमरी में उनके द्वारा रोपे और विकसित किये गये २०७ पेड़ हर पर्यावरण प्रेमी को यह अनुभव करा रहे हैं कि पर्यावरण संरक्षण के लिए बड़े-बड़े संकल्प लेने और वृक्षारोपण कर भूल जाने वालों की नहीं, उनकी तरह पूरी लगन और मेहनत से कुछ कर-गुजरने वालों की आवश्यकता है।

हरित ऋषि के रूप में बनी पहचान

महाराष्ट्र की विद्यालयीन मराठी पाठ्य पुस्तकों में एक ऐसे 'हिरवा ऋषि (हरित ऋषि)' का पाठ पढ़ाया जाता है, जो तरह-तरह के वृक्षों के बीज एकत्रित करते और उन्हें उचित मौसम में मिट्टी की पुड़ियों में दबाकर बस या रेल से यात्रा करते हुए किनारों पर फैंकते जाते थे। उनकी इस अनूठी योजना से बड़ी संख्या में वृक्ष विकसित हुए, जिनके कारण वे हरित ऋषि के नाम से विख्यात् हुए। श्री घाटे गुरुजी द्वारा प्रस्तुत वृक्षारोपण का आदर्श उन्हीं की याद दिलाता है।

राजुराघाटे के मूल निवासी श्री रामचंद्र घाटे अपने क्षेत्र में घाटे गुरुजी के नाम से जाने जाते हैं। अशिक्षा और अत्यंत गरीबी के बीच माता-पिता के आशीर्वादों के साथ उन्होंने कठिन परिस्थितियों में पढ़ाई की। उन्होंने अपना शिक्षण होस्टेल में रहकर घरों में सफाई कर, अनाज साफ कर पूरी की। स्वावलम्बन के संस्कारों के धनी श्री घाटे जी शिक्षक के रूप में परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के संपर्क में आये और तब से गायत्री विद्या को घर-घर पहुँचाना अपना जीवन लक्ष्य बना लिया।

श्री घाटे गुरुजी ने सेवानिवृत्ति के बाद सप्त आन्दोलनों में से एक वृक्षारोपण को चुना और पूरी तरह उसके लिए समर्पित हो गये। उन्होंने पिछले तीन वर्षों में २०७ वृक्ष लगाये और अपनी पेंशन राशि से ही खाद-पानी और ट्री-गार्ड की व्यवस्था की। उन्होंने इन वृक्षों के पालन-पोषण के लिए २०० रुपये प्रतिदिन के दो माली भी रखे हैं।

वन लीटर वंडर

घाटे गुरुजी ने भीषण गर्मी में भी 'वन लीटर वंडर' पद्धति को अपनाकर अपने पौधों को जीवंत रखने में असाधारण सफलता पायी है।

क्या है वन लीटर वंडर पद्धति?

एक फुट व्यास वाला गोल गड्ढा खोदें। उसमें बारीक मिट्टी और गोबर की खाद मिलाकर भर दें। फिर उसमें वृक्षारोपण करें। एक लीटर बिसलरी पानी की पुरानी बोतल लें। उसका पेंदा काट दें और ढक्कन हटा दें। उसे पौधे के पास मुँह की तरफ से गड्ढे में इस प्रकार गाढें कि वह केवल ३ इंच मिट्टी के बाहर रहे। इस बोतल में प्रतिदिन केवल एक लीटर पानी भरते रहें। पौधे को भरी गरमी में भी जीवंत रखने के लिए यह प्रयोग पर्याप्त होगा।

रक्तदान कर दी साथी को श्रद्धांजलि

नोएडा (दिल्ली क्षेत्र)

गायत्री चेतना केन्द्र, नोएडा से जुड़े युवा संगठन ने २४ अप्रैल को विशाल रक्तदान शिविर आयोजित कर अपने दिवंगत साथी स्व. श्री संजय सिंह को भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित की। उल्लेखनीय है कि हाल ही में श्री संजय सिंह का आकस्मिक देहांत हो गया था।

रक्तदान करते स्वयंसेवक

रक्तदान शिविर का शुभारंभ चेतना केन्द्र व्यवस्थापक श्री प्रदीप दीक्षित द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। रक्तदान करने वाले समस्त परिजनों को प्रमाण पत्र एवं युग साहित्य प्रदान कर सम्मानित किया गया। नीटू, अवनीश, अभिषेक, अजय, रवि आदि ने इस आदर्श और सार्थक श्रद्धांजलि समारोह में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

सेवाधर्म को गौरवान्वित करते प्रबुद्ध युवा

सावनेर, नागपुर (महाराष्ट्र)

स्थानीय दिया संगठन से सम्बद्ध युवा डॉ. राहुल दाते, प्रेमरंजन सिंह, दत्तात्रय काले आदि ने आदाता स्थित मातोश्री वृद्धाश्रम जाकर वरिष्ठ नागरिकों के बीच फल वितरण किया। इस अवसर पर उन्होंने युवा पीढ़ी में भावसंवेदनाओं के जागरण से वरिष्ठ नागरिकों की अपनत्व बढ़ाने की आवश्यकता पर चर्चा की। वक्ताओं ने आधुनिकीकरण एवं नशे की प्रवृत्ति बढ़ने को शुष्क होती संवेदनाओं का मुख्य कारण बताया। कार्यक्रम का संचालन श्री विजय सिंह बैस एवं आभार प्रदर्शन श्री अरविंद यादव ने किया।

वृद्धाश्रम में सेवा

३ मई को युवा चिकित्सकों ने समीपस्थ बोरगाँव में नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया, जिसका सैकड़ों ग्रामीणों ने लाभ लिया। आत्मचैतन्य हॉस्पिटल में सेवाएँ दे रहे डॉ. राहुल दाते, डॉ. वैशाली दाते, सृष्टि नेत्रालय के डॉ. विलास मानकर, वंश डेंटल क्लीनिक के डॉ. निलेश महंत, होम्योपैथी के डॉ. कमलेश काकडे, डॉ. अनूप जगताप ने सेवाएँ प्रदान कीं।

स्वास्थ्य शिविर

२७ अप्रैल को वेकोलि परिसर से लगी झोंपड़पट्टी के गरीब बच्चों को पुस्तक और नोटबुक प्रदान किये, जिनका वितरण पत्रकार श्री सुरेन्द्र नाईक व निलेश पटे के हाथों किया गया। उल्लेखनीय है कि दिया संगठन पिछले छ: माह से इस झोंपड़पट्टी के ५० बच्चों की पढ़ाई में मदद कर रहा है।

विद्यार्थियों की सहायता

जाग्रत् भाव संवेदना से हुआ बेबस रज्जो की बेटी का ब्याह

उन्नाव (उत्तर प्रदेश) जिले के बिछिया ब्लॉक के नवागंतुक ग्राम विकास अधिकारी श्री पुत्तनलाल ने ग्राम पंचायत तौरा निवासी बेबस रज्जो की बेटी सुखदेई के हाथ अपने बलबूते पीले कराकर एक गरीब को जैसे नया जीवन दे दिया है। अगर पीड़ित समाज के गरीबों को ऐसा सहारा मिलने लगे तो फिर गरीबी अभिशाप न रह जाये।

रज्जो के पति मोतीलाल का १८ वर्ष पहले निधन हो चुका था, लेकिन उसने पूरी हिम्मत और मेहनत से अपने दोनों बच्चों बिरजू और सुखदेई को पाला था। कुछ दिनों पहले बिरजू का भी विवाह हो गया। उसे लगा कि बिरजू के सहारे चार-छ: महीने में ही बेटी सुखदेई के हाथ भी पीले कर देगी।

दैव योग से इसी बीच बिरजू भी भगवान को प्यारा हो गया। पति के वियोग का आघात तो वह सह गयी, लेकिन इस घटना ने उसे पूरी तरह तोड़ दिया। अब सुखदेई के विवाह की चिंता उसे खाये जा रही थी। तभी ग्राम विकास अधिकारी श्री पुत्तनलाल ने रज्जो की बेबसी को समझकर उसकी जो सहायता की, वह समाज के लिए एक आदर्श बन गयी।

आगजनी के पीड़ित परिवारों की सहायता की

सीतापुर (उत्तर प्रदेश)

तहसील लहरपुर के गाँव अंगरौजा में अप्रैल के अंतिम सप्ताह में भीषण आग लग गयी। इसमें २४ घर पूरी तरह से जलकर राख हो गये। निकटवर्ती प्रज्ञापीठ ग्राम न्यामपुर के परिजनों ने आगजनी से पीड़ित परिवारों को तत्काल सहायता प्रदान की। श्री राजेन्द्र प्रताप सिंह के अनुसार उन्होंने प्रत्येक परिवार को ५ किलो राशन, थाली ग्लास कटोरी का सेट और बहिनों, भाइयों और बच्चों के लिए आवश्यक कपड़ों का सेट प्रदान किया।

जिनका प्रकृति से प्यार, वे लेते स्वास्थ्य सुधार

प्राकृतिक चिकित्सा शिविर में लाभान्वित हुए 200 लोग

बुरहानपुर (मध्य प्रदेश)

श्रीकृष्ण मंगल परिसर, बुरहानपुर में गायत्री धाम सेंधवा द्वारा १५ अप्रैल से पाँच दिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा शिविर लगाया गया। २०० सहज सुलभ है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक चिकित्सा से उपचार कराकर स्वस्थ हो जाना ही पर्याप्त नहीं है। यदि स्वस्थ रहना है तो प्रकृति के साथ संतुलन स्थापित करने वाली जीवन साथ आहार-विहार संबंधी आवश्यक जानकारियाँ भी दी जाती रहीं। पाँच दिनों में शिविरार्थियों ने अपने जटिल रोगों में आश्चर्यजनक सुधार की अनुभूति की। अपर कलेक्टर श्री रमेश

प्राकृतिक चिकित्सा शिविर में किये गये विविध प्रयोग : बायें - रीढ़ की हड्डी पर मिट्टी लेपन और दायें-योग व्यायाम

शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए श्री मेवालाल पाटीदार ने प्राकृतिक चिकित्सा संबंधी जानकारी देते हुए बताया कि शरीर का निर्माण जिन पाँच तत्वों-मिट्टी, अग्नि, आकाश, वायु और जल से होता है, उनके बीच संतुलन बिगड़ने से ही विविध रोग जन्म लेते हैं। प्राकृतिक चिकित्सा शरीर में विद्यमान विजातीय तत्वों को दूर करने की सबसे प्राचीन और कारगर विद्या है, जो सबके लिए शैली को भी अपनाना पड़ेगा।

शिविर का आरंभ जिला पंचायत मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री रमेश भंडारी ने दीप प्रज्वलन कर किया। शिविर प्रभारी श्री प्रफुल मुंशी के अनुसार पाँच दिनों में जलनेति, एनिमा, शंख प्रक्षालन, मिट्टी लेप, सूर्य स्नान, मालिश आदि के माध्यम से शरीर शुद्धि करते हुए तमाम रोगों का उपचार किया गया। शिविरार्थियों को संतुलित आहार का सेवन करने के भंडारी, वन विभाग के एसडीएफओ, प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. रमेश सोमानी, उद्योगपति श्री भगवती प्रसाद लखोटीया, ऑक्सफोर्ड स्कूल की संचालिका श्रीमती जयश्री ठाकुर सहित कई प्रतिष्ठित महानुभाव इस शिविर में शामिल थे। शिविर के समापन समारोह में अनेक शिविरार्थियों ने शरीर में हल्केपन, वजन में आयी असाधारण कमी और पाँच दिन में मिले स्वास्थ्य रक्षा के बहुमूल्य सूत्रों की चर्चा की।

दुर्गा बनीं गाँव की देवियाँ

नशेड़ियों पर कसा शिकंजा

होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) -अपने पतियों की शराब की लत से परेशान ग्राम सांवलखेड़ा की देवियों ने अपने सामूहिक प्रयासों से इस समस्या पर ९० प्रतिशत नियंत्रण पा लिया है। यह उल्लेखनीय, अनुकरणीय प्रयास गाँव की सरपंच श्वेता शर्मा की पहल पर हुआ है।

सांवलखेड़ा में शराबियों की संख्या निरंतर बढ़ती ही जा रही थी, जिसका दुष्प्रभाव बच्चों पर स्पष्ट दिखाई देने लगा था। इस समस्या के समाधान के लिए ग्राम सरपंच ने पहल करते हुए पत्नी पंचायत बुलाई। इसमें एकमत से निर्णय लिया गया कि बहिनें शराब पीकर घर में आने वाले पति को घर में प्रवेश करने नहीं देंगी। इतना ही नहीं, उन्हें पूरे एक सप्ताह तक केवल एक ही समय भोजन दिया जायेगा। यदि इस निर्णय के विरुद्ध कोई व्यक्ति अपनी पत्नी या घरवालों पर किसी प्रकार का अत्याचार करता है तो उसके खिलाफ सामूहिक मोर्चा खोला जायेगा।

बहिनों के संगठित प्रयास रंग लाये। बहिनों के इस फैसले का गाँव के हर वर्ग ने स्वागत किया। सुश्री श्वेता शर्मा के अनुसार इस निर्णय से गाँव में नशाखोरी की समस्या पर नकेल कसने में ९० प्रतिशत तक सफलता मिल गयी है।

अश्लीलता और नशे के विरुद्ध रैली

वाराणसी, उत्तर प्रदेश

१९ मार्च को गायत्री परिवार वाराणसी के युवा संगठन 'दिव्य भारत युवा संघ, वाराणसी' ने काशी की संस्कृति को बचाने के आह्वान के साथ अश्लीलता और नशे के विरोध में रैली निकाली। जिला जेल अधीक्षक श्री राम कुमार त्रिपाठी ने हरी झंडी दिखाकर इसे रवाना किया। रैली के समय 'अश्लीलता का दहन करना है, नारी लाज बचाना है।' और 'फूहड़ गाने गंदे चित्र, इनसे दूर रहो हे मित्र।' जैसे जोशीले नारों से काशी की गलियाँ गूँज उठी। ११ किलोमीटर मार्ग पर निकाली गयी यह रैली शहर के प्रमुख मार्गों से होते हुए कचहरी के पास पहुँची। वहाँ विचार क्रांति की मशाल से अश्लीलता का पुतला फूँका गया।

यात्रा का समापन पर उदय प्रताप महाविद्यालय के प्राचार्य-डॉ. गुलाब चन्द्र सिंह ने कहा कि यह विश्वास एवं धर्म की रैली है। हम सबका लक्ष्य सामाजिक कुरीतियों को जड़ से मिटाना है। रैली का संयोजन डॉ. माताफेर पाण्डेय ने तथा संचालन श्रीराम मौर्य ने किया।

मंदाकिनी संरक्षण एवं शुद्धिकरण अभियान

गायत्री परिवार को मिल रहा है प्रशासन और समाज का भरपूर सहयोग

चित्रकूट (उत्तर प्रदेश)

शक्तिपीठ चित्रकूट विगत दो वर्षों से मंदाकिनी संरक्षण एवं शुद्धिकरण अभियान में जुटा है। क्षेत्र की जनता ने इस अभियान में भरपूर सहयोग दिया और सराहना की है। जब भी शक्तिपीठ की ओर से आह्वान होता है, माँ के आँचल को धोने के लिए हजारों हाथ उठ जाते हैं।

गायत्री शक्तिपीठ चित्रकूट पर मंदाकिनी शुद्धिकरण हेतु 'जनता एवं प्रशासन समन्वय संगोष्ठी' का आयोजन हुआ। इस संगोष्ठी से गायत्री परिवार के अभियान को हर प्रतिभागी-संगठन की ओर से सहयोग का भरपूर समर्थन मिला। इसमें केन्द्रीय मंत्री श्री अरुण यादव, जिलाधिकारी चित्रकूट श्री दिलीप कुमार गुप्ता, नगरपालिका अध्यक्ष कर्वी सुश्री लक्ष्मीदेवी साहू, नगर पंचायत अध्यक्ष श्री नीलांशु चतुर्वेदी, विधायक कर्वी श्री दिनेश कुमार मिश्र सहित कई अधिकारी, जनप्रतिनिधि और समाजसेवी संगठनों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

शक्तिपीठ व्यवस्थापक डॉ. रामनारायण त्रिपाठी ने सभी के भावभरे स्वागतोपरांत गायत्री परिवार द्वारा गंगा, नर्मदा, ताप्ती, मंदाकिनी आदि नदियों के शुद्धिकरण और जल संरक्षण के लिए चलाये जा रहे अभियान की विस्तृत जानकारी दी। केन्द्रीय मंत्री श्री अरुण यादव ने इन कार्यों की गद्‌गद हृदय से सराहना करते हुए इनकी जानकारी माननीय प्रधानमंत्री जी तक पहुँचाने की बात कही। उन्होंने इस दिशा में उ.प्र. और म.प्र. की सरकारों को अपनी सरकार का पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया। जिलाधिकारी ने 'मनरेगा' से मंदाकिनी शुद्धिकरण हेतु स्वीकृति प्रदान करने की बात कही।

ग्रामीणों का उत्साह

वरवारा ग्राम में सूखी मंदाकिनी को जीवित करने के लिए शक्तिपीठ चित्रकूट द्वारा ग्रामवासियों की बैठक बुलाई गयी। ग्रामवासी इस योजना से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने तत्काल फावड़े उठाये और स्वस्तिवाचन के साथ खुदाई आरंभ कर दी। एक फीट खुदाई के बाद ही गाँववासियों को जल प्राप्त हो गया। सभी में अपार उत्साह उभरा। अब वे गाँववासी जल संरक्षण योजना पर ज्यादा से ज्यादा काम करने को उत्साहित हैं।

४०० जोड़ों का सामूहिक विवाह

राजनांदगाँव (छत्तीसगढ़)

गायत्री परिवार राजनांदगाँव द्वारा डोगरगढ़ में ४०० जोड़ों का सामूहिक विवाह संस्कार कराया गया। स्थानीय शाखा ने इसके लिए बिलासपुर, रायपुर, धमतरी, महासमुंद, दुर्ग, भिलाई, बेमेतरा, दल्ली राजहरा, बालोद, बेरला आदि शक्तिपीठों से २५० उपाचार्य बुलाकर हर विधि को पूरे विधि विधान से सम्पन्न करायी थी। यह संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित करने की मिशन की प्रबल आकांक्षा का ही परिणाम था कि एक-एक विधि की प्रेरणाओं को नवयुगलों को समझाकर तद्‌नुरूप जीवन जीने की प्रेरणा दी गयी।

- कई जिलों से बुलाए २५० उपाचार्य
- हजारों लोगों तक पहुँचे सुखी दाम्पत्य जीवन के सूत्र

कार्यक्रम का संचालन श्री मुरलीधर साहू एवं श्री प्रकाश शुक्ला की टोली ने किया। उन्होंने पूज्य गुरुदेव का कथन-"खर्चीली शादियाँ हमें दरिद्र एवं बेईमान बनाती हैं।" का उल्लेख करते हुए कहा कि सामूहिक विवाहों का क्रम हर दृष्टि से बहुत प्रासंगिक है। इनसे धन और समय की बर्बादी नहीं होती। उन्होंने कहा कि ऐसे विवाह तभी सार्थक और प्रभावशाली सिद्ध होंगे, जब धन, पद और यश का भेद छोड़कर हर व्यक्ति समाज और राष्ट्र के हित में अपने बच्चों का विवाह ऐसे समारोहों में ही कराने आरंभ कर दें। कार्यक्रम में बहिनों की विशिष्ट भूमिका रही।

अभी सूखी नहीं है भाव-संवेदनाओं की सरिता

बड़वानी (मध्य प्रदेश)

सुंदर-सुयोग्य जीवन साथी की चाह किसे नहीं होती ? लेकिन इस समाज में कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो दूसरों की खुशियों में अपने जीवन की सार्थकता तलाशते हैं। ऐसे ही अपवादों में से एक हैं दोदवाड़ा के चि. बलिराम, जिन्होंने बैसाखियों के सहारे जीवन बिताने वाली सनगाँववासी श्री रामचंद्र यादव की पुत्री रुक्मिणी के संग सात फेरे लेकर उसे अपनी जीवन संगिनी बना लिया। यह विवाह संस्कार बड़वानी जिले के गायत्री शक्तिपीठ अंजड़ पर १३ मई को सम्पन्न हुआ।

चि. बलिराम शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ एवं एक सम्पन्न कृषक श्री मंगल यादव का पुत्र है। पूज्य गुरुदेव के विचारों के प्रति दृढ़ आस्था रखने वाले बलिराम ने पहले ही अपने मनोनुकूल कन्या से विवाह करने का निश्चय कर रखा था। कई कन्याएँ देखीं, लेकिन रुक्मिणी को देखते ही मन ही मन निश्चित कर लिया कि वह उसी से विवाह करेंगे।

रुक्मिणी बचपन में पोलियो के कारण दोनों

पावों से अपंग है और बैसाखियों के सहारे चलती है। विवाह के समय शक्तिपीठ पर उसने कहा कि उसने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि इतना अच्छा घर-वर उसे मिलेगा। आँखों में खुशी के आँसू लिये कहा कि मैया गायत्री ने मेरे जीवन में खुशियाँ भर दीं।

संस्कारों की खातिर दोनों पावों से अपंग कन्या बनायी अपनी जीवन संगिनी

गायत्री परिवार के वरिष्ठ प्रतिनिधि श्री महेन्द्र भावसार ने नवदम्पति को युग साहित्य भेंट कर सम्मानित किया। सभी ने उनके सफल, सुखी दाम्पत्य जीवन की कामना की। गायत्री शक्तिपीठ पर सम्पन्न इस विवाह संस्कार ने गायत्री परिवार ही नहीं, सारे समाज के समक्ष एक अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया है। इस आदर्श पहल से प्रेरित होकर रुक्मिणी के परिवार वालों ने व्यसन न करने और युग निर्माण आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी करने का संकल्प लिया।

समय सत्य के अतिरिक्त, हर वस्तु को कुतर खाता है। -हक्सले

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा से उभरती-सम्मानित होती प्रतिभाएँ

शिक्षक गरिमा शिविर : राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका के प्रति जागरूक हो रहे हैं गुरुजन

देहरादून (उत्तराखण्ड)

उत्तराखण्ड राज्य का प्रथम जिला स्तरीय शिक्षक गरिमा शिविर ८ मई को शिक्षक भवन सभागार, रेसकोर्स रोड़, देहरादून में आयोजित हुआ। इसमें राजकीय और निजी विद्यालयों के लगभग २०० प्राचार्य/शिक्षकों ने भाग लिया।

शिविर का शुभारंभ वरिष्ठ परिजन श्री शांति प्रकाश शर्मा द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ। वक्ताओं ने वर्तमान विषम परिस्थितियों में राष्ट्र में नैतिक मूल्यों की कमी और सांस्कृतिक विरासत के अवमूल्यन पर चिंता व्यक्त की। प्राय: सभी का मत था कि गुरु की गरिमा ईश्वर के बाद सर्वोपरि है, लेकिन अपनी गरिमा और दायित्वों का सही बोध न होने के कारण नयी पीढ़ी का अपेक्षित निर्माण नहीं हो सका है। शिक्षकों ने इतिहास को पुनर्जीवित करते हुए नैतिक मूल्यों की स्थापना करने का संकल्प व्यक्त किया।

इस शिविर में श्री योगेन्द्र सिंह-व्यवस्थापक शक्तिपीठ भोगपुर, श्री चक्रधर थपलियाल-शांतिकुंज प्रतिनिधि, डॉ. यादव, श्री पैन्युली, डॉ. मिश्र, श्री पाण्डे आदि वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किये। श्री एच.सी. डोभाल-संयोजक भासंज्ञाप देहरादून, श्री आर.सी. गुप्ता, श्री नरेन्द्र जी, श्री लोकबहादुर आदि का शिविर संयोजन में अग्रणी योगदान रहा।

जयपुर (राजस्थान)

जयपुर जिले में विकसित हो रहे विशाल औद्यागिक संस्थान महिन्द्रा वर्ल्ड सिटी में गायत्री परिवार की स्थानीय शाखा द्वारा शिक्षक गरिमा दिवस का आयोजन किया गया। शिविर में सेज परिसर के सभी विद्यालयों के प्रबंधक एवं प्रधानाचार्यों ने भाग लिया।

महिन्द्रा वर्ल्ड सिटी, जयपुर के प्रबंधक-प्रधानाचार्य शिक्षक गरिमा दिवस मनाते हुए

कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए कम्पनी के सीईओ. श्री बी.के. सुब्बैया ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि महिन्द्रा ग्रुप क्षेत्र के आर्थिक विकास के साथ सामाजिक विकास के लिए भी प्रयासरत है। इसी क्रम में एम.डब्ल्यू.सी. के सहयोग से टी.बी.आई. एवं गायत्री परिवार के द्वारा क्षेत्र में कई रचनात्मक गतिविधियाँ चलाई जा रही हैं।

शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री आरसी गुप्ता ने सामाजिक विकास में शिक्षा के महत्त्व पर चर्चा की। श्री संदीप त्रिपाठी ने स्थानीय शाखा की रचनात्मक गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

सेज के हैड इंफ्रास्ट्रक्चर जीएम श्री संजय सिन्हा ने बताया कि महिन्द्रा वर्ल्ड सिटी उत्तर भारत का सबसे बड़ा आर्थिक जोन है, जिसके फलस्वरूप एक लाख लोगों को रोजगार उपलब्ध होगा। इस विकास के क्रम में उन्होंने गायत्री परिवार के सहयोग की सराहना की और श्री संदीप त्रिपाठी द्वारा चलाये जा रहे रचनात्मक कार्यों को गति देने पर बल दिया। सत्र का समापन उनके द्वारा धन्यवाद ज्ञापन से हुआ। इस अवसर पर महिन्द्रा के वरिष्ठ अधिकारी श्री जेके शर्मा, श्री अभिनव सिंह एवं गायत्री परिवार के धर्मेश श्रीवास्तव, ममता त्रिपाठी आदि मुख्य रूप से उपस्थित थे।

जगह-जगह आयोजित हुए पुरस्कार वितरण समारोह

लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

राजाजीपुरम जोन : एस.के.डी. एकेडमी, राजाजीपुरम् के ऑडिटोरियम में दिनांक १५ मई को राजाजीपुरम जोन का भासंज्ञाप. पुरस्कार वितरण समारोह नगर के प्रसिद्ध शिक्षाविद् माननीय श्री एस.के.डी. सिंह के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। इस जोन के अंतर्गत नगर क्षेत्र, ठाकुरगंज, मलीहाबाद, माल, काकोरी, गोसाईंगंज के १६२ विद्यालयों ने भाग लिया था। परीक्षा में शामिल सभी विद्यालयों के

लखनऊ में बायें-राजाजी पुरम और दायें इंदिरा नगर जोन के समारोहों में सम्मानित हुए विद्यार्थी

प्राचार्यों को जन्म शताब्दी के लोगो युक्त आकर्षक प्रशस्ति पत्र प्रदान कर विशेष रूप से सम्मानित किया गया। सर्वोच्च अंक प्राप्त प्रतिभागियों-कु. रोशनी वर्मा, प्राची तिवारी, गौरी शर्मा एवं अनुष्का गुप्ता को अंगवस्त्र, युग साहित्य एवं नकद राशि भेंट कर सम्मानित किया गया।

इंदिरा नगर जोन का भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा पुरस्कार वितरण समारोह गायत्री ज्ञान मंदिर, इंदिरा नगर में ८ मई को आयोजित हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री वी.वी. सिंह (आई.आर.एस.) संयुक्त (आयुक्त आयकर), विशेष अतिथि श्रीमती अनीता श्रीवास्तव (पी.सी.एस.)-संयुक्त सचिव उ.प्र. शासन एवं श्री संदीप श्रीवास्तव थे। जोन के परीक्षा संयोजक श्री उमानंद शर्मा के अनुसार वर्ष २०१० में उनके जोन के १२४ विद्यालयों के १२००० विद्यार्थी परीक्षा में शामिल हुए थे। प्रधानाचार्यों, शिक्षकों एवं सहयोगी कार्यकर्त्ताओं को प्रशस्ति पत्र और 'ऋषि चिंतन के सान्निध्य में' ग्रंथ व अन्य साहित्य भेंट कर सम्मानित किया गया।

हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा-२०१० का प्रांतीय सम्मान समारोह २७ मार्च को हैदराबाद में आयोजित हुआ। कमिश्नर एवं डायरेक्टर शिक्षा विभाग-श्री आर. सत्यनारायण, डायरेक्टर ऑफ पोस्टल सर्विस श्री पी.व्ही.एस. रेड्डी, प्रांतीय संयोजक श्री अश्विनी सुब्बाराव, शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री आर.के. नायक एवं श्री परमानन्द द्विवेदी इस समारोह में मुख्य रूप से मंचासीन थे।

श्री आर. सत्यनारायण भारतीय संस्कृति एवं संस्कार परम्परा के उन्नयन के लिए बच्चों के बीच चलाये जा रहे इस कार्यक्रम से अभिभूत हुए। उन्होंने राज्य में परीक्षा के विस्तार के लिए हर संभव सहयोग करने का आश्वासन दिया। विद्यार्थियों में इस परीक्षा के लिए निरंतर बढ़ती लोकप्रियता को देखकर समस्त अतिथियों ने आयोजक मण्डल को साधुवाद दिया।

सिवनी (मध्य प्रदेश)

३१ मार्च को गायत्री शक्तिपीठ सिवनी में भासंज्ञाप पुरस्कार वितरण समारोह जिला शिक्षा अधिकारी श्री नारायण पटले के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। इसमें जिला स्तर एवं तहसील स्तर पर अग्रणी रहे विद्यार्थियों का सम्मान किया गया। जिला संयोजक श्री शिवाधार शर्मा के अनुसार सिवनी जिले के ५४० विद्यालयों के ३२ हजार से अधिक विद्यार्थी परीक्षा में शामिल हुए थे। शा.मा.वि. जैतपुर कलॉ में ६वीं कक्षा का छात्र चि. निखिल बघेल अपने वर्ग में प्रांतीय स्तर पर द्वितीय रहा। उसे विशेष स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। जिला शिक्षा अधिकारी ने अलगे वर्ष जिले के ५० हजार विद्यार्थियों को परीक्षा में शामिल कराने की प्रेरणा दी। समारोह में जिले के २० विद्यालयों के प्राचार्य एवं आचार्यों को उनके विशेष सहयोग के लिए स्मृति चिह्न एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गये।

लोक मंगल के लिए समर्पित किया सम्मान

खड़कौद, बुरहानपुर (मध्य प्रदेश)

बुरहानपुर का जिला एवं तहसील स्तरीय पुरस्कार वितरण समारोह गोलोक धाम खड़कौद में सम्पन्न हुआ। श्रीराम गुरुकुल विद्यालय के आचार्य श्री संजय राठौड़ ने बताया कि बुरहानपुर जिले में वर्ष २०१० में १० हजार से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया था। हर कक्षा में जिला एवं तहसील स्तर पर वरीयता प्राप्त ७२ विद्यार्थियों को इस समारोह में सम्मानित किया गया। सेवा सदन उ.मा.वि. की छात्रा प्रतिभा सूर्यभान ने अपनी पुरस्कार राशि (३००रु.) को समाज के नवनिर्माण के लिए हो

बुरहानपुर जिले में शिक्षकों का अभिनंदन

रहे रचनात्मक कार्यों में अपने अंशदान स्वरूप लौटाकर अपनी राष्ट्रभक्ति का आदर्श प्रस्तुत किया। ज्ञानदीप उ.मा. विद्यालय, शाहपुर को उत्कृष्ट सहभागिता के लिए विशेष पुरस्कार एवं ट्रॉफी प्रदान की गयी। उल्लेखनीय है कि जिले में इसी विद्यालय के सर्वाधिक छात्र परीक्षा में शामिल हुए थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री हरिओम अग्रवाल ने की।

निघासन, खीरी लखीमपुर (उत्तर प्रदेश)

गायत्री परिवार निघासन ने १७ अप्रैल को भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का तहसील स्तरीय पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया। पुरस्कृत बच्चों के साथ इस अवसर पर क्षेत्र के युवा बड़ी संख्या में उपस्थित थे। आयोजकों ने उन्हें सत्प्रेरणाएँ प्रदान करते हुए व्यसनों से दूर रहने की सलाह दी। प्रयास प्रभावशाली रहे, अनेक युवकों ने व्यसन छोड़ने के संकल्प लिये।

आदर्श शिक्षिका का विशिष्ट सम्मान

सेवा निवृत्ति के साथ ही मिश्रा दम्पति ने मिशन को समर्पित किया जीवन

बरगी, जबलपुर (मध्य प्रदेश)

अखिल विश्व गायत्री परिवार, बरगी द्वारा विद्यार्थियों का व्यक्तित्व निखारने की प्रबल आकांक्षा रखने और उस दिशा में उल्लेखनीय कार्य कर दिखाने वाली शा. बालक उ.मा. शाला बरगी की प्राचार्या श्रीमती इंदु मिश्र का नागरिक अभिनंदन किया गया। ३० अप्रैल को उनकी सेवा निवृत्ति के अवसर पर यह अभिनंदन समारोह आयोजित हुआ। जिला शिक्षा अधिकारी श्री डी.आर. ज्ञानी जी द्वारा उन्हें इस अवसर पर पी.पी.ओ. प्रदान किया गया।

अभिनंदन समारोह डॉ. ओ.एन. त्रिपाठी-प्राचार्य नवोदय विद्यालय के मुख्य आतिथ्य और श्री प्रकाश मिश्र की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। श्री बालकिशन अग्रवाल, श्रीमती सरोज बम बम तिवारी-जनपद पंचायत सदस्य, गायत्री परिवार के प्रतिनिधि श्री के.बी. साहू व श्री प्रमोद श्रीवास्तव कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। समस्त महानुभावों की उपस्थिति में श्रीमती इंदु एवं उनके पति श्री ललित मिश्र ने अपनी समाजसेवा की उमंग को यथावत बनाये रखने के लिए गायत्री परिवार को आजीवन समयदान करने का संकल्प व्यक्त किया। अब वे गायत्री शक्तिपीठ में रहकर ही अपनी भावभरी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।

श्रीमती इंदु मिश्रा ने अपने विद्यालय में बच्चों के उत्कर्ष के लिए कई उल्लेखनीय एवं

अनुकरणीय कार्य किये हैं। उनके प्रयासों से विद्यालय व्यसनमुक्ति के लिए समय-समय पर कार्यक्रम होते रहे, जिनके परिणाम स्वरूप यह विद्यालय पूरी तरह से व्यसन मुक्त हो चुका है। मध्य प्रदेश के अनेक विद्यालयों में आदर्श विद्यार्थी एवं व्यसनमुक्त गुरुकुल योजना आरंभ हुई है, जिसका शुभारंभ श्रीमती इंदु मिश्र के विद्यालय से ही हुआ।

श्रीमती मिश्रा ने अपने विद्यालय में ज्ञानदीक्षा की पुनीत परंपरा का शुभारंभ किया। इस विद्यालय में प्रतिवर्ष भासंज्ञाप. आयोजित होती है। वर्ष 2010 में यह सर्वाधिक छात्र संख्या बिठाने वाला विद्यालय था।

संसार का सबसे बड़ा दीवालिया वह है, जिसने उत्साह खो दिया।

नये चेतना केन्द्रों के निर्माण के लिए भव्य समारोहों के साथ जगाये भूमि के संस्कार

घुमारवीं, बिलासपुर (हिमाचल प्रदेश)

रामनवमी-१२ अप्रैल को गायत्री चेतना केन्द्र निर्माण के लिए ९ कुण्डीय गायत्री यज्ञ के साथ भूमिपूजन सम्पन्न हुआ। शांतिकुंज से पहुँची श्री शशिकांत सिंह, श्री श्याम यादव, श्री दिलथिर यादव और श्री रवीन्द्र शर्मा की टोली ने इस भूमिपूजन को क्षेत्र के दिव्य संस्कारों तथा देवभूमि के दिव्यज्ञान के पुनर्जागरण का संकल्प बताया। उन्होंने कहा कि विनाश और विकास के बीच झूलती मानवता को युगऋषि का स्पष्ट संदेश है कि जिन्हें पतन-पराभव के गर्त से बचना है वे वेदमाता का दामन थाम लें। हीन विचारों तथा कुरीतियों को छोड़कर जीवन में दिव्यता के पोषण की साधना आरंभ कर दें। इस अवसर पर स्थानीय विधायक श्री राजेश धर्माणी, श्री राजेन्द्र गर्ग-सदस्य शिक्षा बोर्ड, श्री कृष्णदास गुप्ता-अध्यक्ष तहसील व्यापार मण्डल घुमरवीं, श्री नानकराम प्रधान, डॉ. श्याम बिहारी शर्मा आदि अनेक प्रतिष्ठित महानुभावों ने भी भाग लिया।

इन्हीं दिनों उपरोक्त टोली द्वारा ११ से १५ अप्रैल की तारीखों में ग्राम मैंहरीकाथला में ५ कुण्डीय यज्ञ एवं प्रज्ञापुराण कथा आयोजन सम्पन्न कराया। दोनों ही कार्यक्रम में लगभग २५ लोगों ने दीक्षा ली। सर्वश्री संतोष कुमार भारद्वाज, आर.एस. राणा, प्रीतमलाल शर्मा, विजयकुमार शर्मा, के.डी. गुप्ता, देशराज एवं विशाल नड्डा कार्यक्रम की सफलता के मुख्य शिल्पी थे।

घुमारवीं में चेतना केन्द्र निर्माण के लिए भूमिपूजन कराती शांतिकुंज की टोली

गायत्री मंत्र का चिकित्सकीय प्रभाव

जबलपुर (म.प्र.) : गायत्री शक्तिपीठ पर आयोजित शिक्षक गरिमा शिविर में डॉ. आर.एस. शर्मा (एम.डी., डीएम कार्डियोलॉजी) एफआईसीपी. ने गायत्री मंत्र के प्रभाव पर विशेष व्याख्यान दिया। अपने प्रयोगों के निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा कि गायत्री मंत्र जप से ६० प्रतिशत व्यक्तियों का उच्च रक्तचाप घटा है। उन्होंने सभा में उपस्थित उच्च रक्तचाप वाले ५० व्यक्तियों को कारगर चिकित्सा के लिए ५ मिनट की गायत्री मंत्र उच्चारण की विधि भी सिखायी। उन्होंने कहा कि इस विधि से मरीजों को हर दो घण्टे में ५ मिनट मंत्रोच्चार दोहराने की आवश्यकता होती है।

डॉ. शर्मा का कहना है कि इस संदर्भ में सभी अध्ययनों की रिपोर्ट अखिल भारतीय भेषज विशेषज्ञ सम्मेलन के १९९४ के गोहाटी में हुए वार्षिक सम्मेलन में भी प्रस्तुत की गयी थी, जो प्रकाशित भी हुई थी। डॉ. शर्मा द्वारा हृदय-मित्र पत्रिका भी प्रकाशित की जा रही है।

पिलानी, झुंझुनू (राजस्थान)

युगऋषि की जन्म शताब्दी के अवसर पर पिलानी शाखा ने शिक्षा नगरी पिलानी को गायत्री विद्या की नगरी बनाने का संकल्प लिया है। इसी संकल्प के साथ हाल ही में गायत्री के २४ अक्षरों को समर्पित २४०० वर्ग गज भूमि खरीदी गयी है। नवरात्रि की मंगलवेला में इस भूमि पर २४ कुण्डीय गायत्री यज्ञ का आयोजन कर इस भूमि को संस्कारित किया गया। १० से १२ अप्रैल की तारीखों में इस गायत्री महायज्ञ को सम्पन्न कराने शांतिकुंज से पहुँची श्री विश्वप्रकाश त्रिपाठी, हेमलाल तत्त्वदर्शी, कमल चौहान की टोली पहुँची थी।

कार्यक्रम के प्रथम दिन अपराह्न मोटर साइकिल रैली निकाली गयी, जिसमें २२५ भाईयों ने भागीदारी की। रैली के उत्तरार्ध में ५५१ बहिनों द्वारा मंगल कलश यात्रा निकाली गयी।

११ अप्रैल को हुए २४ कुण्डीय यज्ञ में भावनाशील नागरिकों के साथ सी.एल.आर. पब्लिक स्कूल एवं दुर्गादेवी पब्लिक स्कूल के बच्चों व शिक्षकों ने विशेष रूप से भाग लिया। सायंकाल ११०० दीपकों के साथ आयोजित मनमोहक दीपयज्ञ एवं भजन संध्या ने जन-जन के मन में दिव्यता का संचार किया।

समापन दिवस पर यज्ञ के साथ २५ लोगों ने गायत्री मंत्र की दीक्षा ली, १० विद्यार्थियों के विद्यारंभ संस्कार हुए। ५०० व्यक्तियों ने शताब्दी मंत्र लेखन अभियान की पूर्णाहुति के साथ सृजन साधना शक्ति कलशों एवं शताब्दी महापुरश्चरण अनुष्ठान की भी पूर्णाहुति की। बिट्स पिलानी के डॉ. आर्य कुमार, डॉ. अनिल भट्ट, डॉ. सुरेखा भनोत, सीरी के वैज्ञानिक डॉ. पी.भानुप्रकाश, एस.एम. शर्मा, डी.पी. रूथला, डॉ. एस.के. चिरानिया, एस.बी.आई. के प्रबंधक बाबूलाल पंवार एवं सभी स्कूलों के प्रधानाचार्य एवं अध्यापक-अध्यापिकाओं की उपस्थिति रही।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद खरे, गोविंदराम सोनी, राजेश धारीवाल, ओमप्रकाश सेन, सुशील मित्तल, पवन शर्मा, हरिसिंह सैनी, हरिमोहन शर्मा आदि प्रमुख कार्यकर्त्ताओं ने गायत्री चेतना केन्द्र के निर्माण का संकल्प लिया।

पिलानी की कलश यात्रा में उमड़ा उल्लास

परिवीक्षाकाल में सेवा का परचम लहरातीं देसंविवि की छात्राएँ

पट्टी, प्रतापगढ़ (उत्तर प्रदेश)

परिवीक्षा काल में पट्टी पहुँची देव संस्कृति विश्वविद्यालय की छात्राओं ने सैफाबाजार में राष्ट्र जागरण दीपयज्ञ कराया। स्थानीय छात्राओं पर उनके ओजस्वी संदेश की गहरी छाप पड़ी। परिणाम स्वरूप वे छात्राएँ जीवन साधना के लिए उत्साहित हुईं। उल्लेखनीय है कि कु.स्नेहा शर्मा एवं कु. पूरण सिंह की टोली ने १६ स्थानों पर दीपयज्ञ, ८ दीपयज्ञ, ५ विद्यालयों में उद्‍बोधन और तीन योग शिविरों का संचालन किया था। अधिकांश कार्यक्रम गाँवों में ही सम्पन्न हुए। छात्राओं का मुख्य कार्यक्रम गायत्री ग्राम तीर्थ पुरुषोत्तमपुर में हुआ, जिसमें ३०० लोगों ने शताब्दी मंत्रलेखन साधना के संकल्प के साथ मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ ग्रहण कीं।

चैत्र नवरात्रि में श्रीमती मालती और डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति के आवास पर अखण्ड जप रखा गया। कु. क्षिप्रा, शिखा, कोमल, जूली, पूनम, आरती, अंजू, रोशनी, कंचन, शीला, स्नेहा, ज्योति, आरती और काजल ने अग्रणी भूमिका निभाते हुए अखण्ड जप में भाग लिया। गायत्री परिवार के श्री अवनिचंद्र उपाध्याय ने कार्यक्रम की पूर्णाहुति के समय सत्प्रवृत्तियों को अपनाने एवं उनका विस्तार करने के लिए सभी को प्रोत्साहित किया। जन्म शताब्दी के निमित्त मंत्रलेखन पुस्तिकाएँ वितरित की गयीं।

वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

वाराणसी में १ मार्च से राष्ट्र जागरण दीपयज्ञों की अभिनव शृंखला आरंभ हुई। देव संस्कृति विश्वविद्यालय की छात्राओं के सहयोग से चलाई जा रही इस शृंखला के आरंभिक चरण में चिरई गाँव, राजातालाब, बड़ागांव, हरदुआ ब्लॉक में अनेक कार्यक्रम आयोजित किये गये। मात्र १५ दिनों में हुए कार्यक्रमों में २५० से अधिक लोगों ने आत्म सुधार की पहल करते हुए किसी भी प्रकार का नशा न करने के संकल्प लिये। कार्यक्रम शृंखला का संयोजन श्री गंगाधर उपाध्याय ने किया।

दिवंगत देवात्माओं को श्रद्धांजलि

निकुम, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

निकुम शाखा की अत्यंत निष्ठावान बहिन श्रीमती दुर्गाबाई पत्नी श्री तोरणलाल साहू का ६२ वर्ष की अवस्था में दिनांक ३० अप्रैल को निधन हो गया। ए.एन.एम. के पद पर रहकर ४० वर्षों तक स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करने वाली स्व. दुर्गाबाई ने सन् ८१ में पूज्य गुरुदेव से दीक्षा लेने के बाद अपने पति के साथ मिलकर मिशन का बहुत काम किया।

उन्नाव (उत्तर प्रदेश)

महिला मण्डल नवाबगंज, उन्नाव की कार्यवाहक श्रीमती कमलेश गुप्ता पत्नी श्री संतोष कुमार गुप्ता का दिनांक ४ अप्रैल को निधन हो गया। अपनी सतत सक्रियता से सैकड़ों परिजनों को युग निर्माण आन्दोलन में नैष्ठिक भागीदारी के लिए प्रेरित-प्रोत्साहित करने वाली स्व. श्रीमती कमलेश बहिन ने परम पूज्य गुरुदेव की जन्म शताब्दी के विशेष अभियान में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

उपरोक्त एवं हाल ही में दिवंगत हुई समस्त देवात्माओं को शांति-सद्‍गति मिले, उनके परिवारी जनों को इस आघात को सहने की सामर्थ्य प्राप्त हो, शांतिकुंज एवं समस्त गायत्री परिवार ऐसी प्रार्थना परम सत्ता से करता है।

विचार क्रांति के अभिनंदनीय प्रयास

ऐसे प्रयास हर क्षेत्र में किये जाने की आवश्यकता है

कानपुर (उत्तर प्रदेश)

दैनिक 'राष्ट्रीय सहारा' के कानपुर संस्करण ने ७ अप्रैल २०११ से परम पूज्य गुरुदेव की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में उनका जीवन-दर्शन जन-जन तक पहुँचाने का क्रम आरंभ कर दिया है। कानपुर के नैष्ठिक परिजन श्री प्रेम किशोर कपूर के प्रयासों से राष्ट्रीय सहारा के प्रत्येक सोमवार को 'गोष्ठी' स्तंभ के अंतर्गत आकर्षक और महत्त्वपूर्ण लेख प्रकाशित किये जा रहे हैं। राष्ट्रीय सहारा के अन्य संस्करणों एवं अन्य समाचार पत्रों में भी इस प्रकार के फीचर प्रकाशित कराकर परिजन पूज्य गुरुदेव का जन्म शताब्दी संदेश जन-जन तक पहुँचा सकते हैं।

राष्ट्रीय सहारा

गोष्ठी

कौन पढ़ सकता है इतना
कौन लिख सकता है इतना

युग परिवर्तन की हूक ने बनाया- आई.पी.एस.

हाल ही में भारतीय पुलिस सेवा में चयनित युग निर्माणी की आत्माभिव्यक्ति के महत्त्वपूर्ण अंश

देव रंजन वर्मा,
लखनऊ विवि. से एम.एससी. (गणित) में गोल्ड मेडलिस्ट
गणित में जूनियर रिसर्च फेलोशिप
पिता-श्री रामचंद्र वर्मा-प्रबंधक स्प्रिंग बड स्कूल लखनऊ।
माता-श्रीमती गीता देवी

आज इस लक्ष्य पर पहुँचकर जब हम सिंहावलोकन करते हैं तो पाते हैं कि पूज्य गुरुदेव ने हमको वो उत्थापक बल प्रदान किया है, जो हमें आने वाले जीवन में अपने लक्ष्य के प्रति आगे बढ़ाता रहेगा।

वर्ष २००४ में हमने गुरुदीक्षा ली और उसी वर्ष गणित में यूजीसी-सीएसआईआर द्वारा आयोजित जेआरएफ (नेट) परीक्षा उत्तीण की। हाँ ये बात अलग है कि युग परिवर्तन व युग निर्माण में भागीदारी करने की पिपासा इतनी तीव्र थी कि हमने पीएच.डी. में प्रवेश नहीं लिया, छात्रवृत्ति छोड़ दी और भारतीय प्रशासनिक सेवाओं की तैयारी में कूद पड़े।

और आज गुरुदेव के जन्मशताब्दी वर्ष २०११ में हम भारतीय पुलिस सेवा के लिए चुन लिये गये हैं। लेकिन हम जानते हैं कि यह चयन हमको गुरुदेव द्वारा दिया गया एक 'प्लेटफॉर्म' ही है, जहाँ से हम उनके आदेशों का कुशलतापूर्वक निर्वहन कर सकें।

हमारे मार्ग में कंटक कम नहीं थे। बहुत संघर्ष और असफलताओं के बाद ही हमको ये सफलता मिली है, किंतु संघर्ष और निराशा के दौर में गुरुदेव ने हमको कभी अपनी नजरों से ओझल होने नहीं दिया। प्रतीत होता है कि यह चुनौतियाँ हमारे लिए आवश्यक थीं। उन्होंने हमें अगर न तपने दिया होता तो शायद अपना सर्वस्व इस समाज के उत्थान में लगा देने की बलवती भावना भी हमारे मन में नहीं बन पायी होती।

ये तपी-तपाई प्रतिभा अगर सही दिशा में लग जायेगी, तो सतयुग के पुनरागमन की गति बहुत बढ़ जायेगी। आज गुरुदेव ने हमको जो अनुदान दिया है, उसका कण-कण इसी लक्ष्य की प्राप्ति में नियोजित होगा, तभी हम उनके शक्ति-अनुदानों का कुछ मूल्य चुका सकेंगे।

श्री देव रंजन वर्मा, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

किसी का मनोबल बढ़ाने से बढ़कर और अनुदान इस संसार में नहीं है।

राष्ट्र जागरण तीर्थयात्राओं से आन्दोलित हो उठा जनमानस

युगसृजेताओं का सम्मान

पिलानी (राजस्थान)

राजस्थान-गुजरात गयी जन्म शताब्दी तीर्थयात्रा का पिलानी में प्रथम स्वागत हुआ। वहाँ सजे हुए ऊँट, घुड़सवार और बैण्ड के साथ शक्ति कलश एवं चरण पादुकाओं की शोभायात्रा शहर में निकाली गयी। मस्तक पर मंगल कलश धारण किये बहिनों सहित पूरे जिले के प्रायः ५०० परिजनों ने इस शोभायात्रा में भाग लिया।

संकल्प श्रद्धांजलि कार्यक्रम चिड़ावा उपखण्ड अधिकारी श्री नारायण सिंह शेषमा के मुख्य आतिथ्य में हुआ, जिसकी अध्यक्षता रैवासा अग्रपीठाधीश्वर स्वामी राघवाचार्य ने की। इस अवसर पर गायत्री परिवार की विचारधारा में सहयोग करने के लिए विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों को सम्मानित किया गया। इस क्रम में बिड़ला एज्यूकेशन ट्रस्ट (शिक्षा), सेवा भारती (समाजसेवा), महावीर मण्डल (आस्था संवर्धन) और गोसेवा के लिए गोशाला प्रतिनिधियों का सम्मान किया गया। श्री संतोष दूलर (जल संरक्षण एवं पर्यावरण रक्षा), डॉ. एन.सी. जैन (वृक्षारोपण), श्री महेन्द्र कटेवा (ग्राम प्रबंधन) का भी सम्मान किया गया। अखण्ड ज्योति (अंग्रेजी) के सम्पादक श्री शम्भूदास, श्री गोपीनाथ पारीक, श्री आर.सी. गुप्ता और श्री मालीराम शर्मा का अग्रज रूप में सम्मान किया गया।

शांतिकुंज से पहुँची श्री विष्णु पण्ड्या, श्री श्याम सिंह की टोली के साथ पुष्कर जोन प्रभारी श्री अंबिका प्रसाद श्रीवास्तव, घनश्याम पालीवाल एवं सीताराम पारीक मुख्य रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में डॉ. राजेन्द्र खरे, सर्वश्री गोविंद सोनी, राजेश धारीवाल, सुशील मित्तल, सुरेन्द्र नरूका, कैलाश शर्मा, हरीसिंह, वी.पी. वर्मा आदि ने अपना अग्रणी योगदान दिया।

पिलानी

उपयात्राएँ निकलीं, युग निर्माण सम्मेलन आयोजित हुआ

श्रीगंगानगर (राजस्थान)

जन्म शताब्दी तीर्थयात्रा के ५ मई को श्रीगंगानगर पहुँचने पर शानदार स्वागत किया गया। प्रथम स्वागत लालगढ़ में हुआ। श्रीगंगानगर के प्रमुख जिला प्रतिनिधि डॉ. रावत उपाध्याय, प्रो. सुदेश धींगड़ा, करणी सिंह भादू आदि शक्ति कलश के प्रथम स्वागत के लिए पहुँचे थे। इस अवसर पर सादुलशहर तहसील की उपयात्रा भी काफिले में शामिल हो गयी।

सायंकाल यात्रा शक्तिपीठ श्रीगंगानगर पहुँची। ५० मोटर साइकिल, १० कार एवं श्री करणपुर, पदमपुर व सूरतगढ़ की उपयात्राओं ने मुख्य जन्मशताब्दी रथयात्रा की अगुवानी की। जहाँ-जहाँ से यात्रा गुजरी, लोगों ने युगऋषि की चरण पादुकाओं पर पुष्पवर्षा कर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्रीगंगानगर का युग निर्माण सम्मेलन एवं अभिनंदन समारोह

शक्तिपीठ पर युग निर्माण सम्मेलन सम्पन्न हुआ। टोली नायक श्री प्रमोद बार्चे ने युग की बदलती फिज़ा की चर्चा करते हुए बेहतर भविष्य का विश्वास दिलाया। उन्होंने कहा कि उज्ज्वल भविष्य के अवतरण के लिए हम सबको एक बार फिर से साधना, सुविचार और संस्कारों का गोवर्धन उठाने के लिए अपनी-अपनी लाठी का बल लगाना होगा।

नगर परिषद् सभापति, यूआईटी के पूर्व अध्यक्ष, पूर्व सभापति, अरोड़वंश ट्रस्ट के अध्यक्ष आदि ने युगऋषि के अभियान के प्रति अपनी आस्था व्यक्त करते हुए श्रद्धा सुमन समर्पित किये। सभी श्रोताओं ने रंगीन दीपक जलाकर जन्म शताब्दी अभियान में अपनी भागीदारी के संकल्प लिये।

सृजनशील नागरिकों का अभिनंदन

उत्तरकाशी (उत्तराखण्ड)

पूज्य गुरुदेव की तप:स्थली उत्तरकाशी जिले के विभिन्न स्थानों में जन्म शताब्दी तीर्थ यात्रा का भावभरा स्वागत हुआ। नगर मुख्यालय पर व्यापार मण्डल अध्यक्ष, नगर पालिका अध्यक्ष एवं कई अन्य समाजसेवियों-पत्रकारों ने ऋषियुग्म की चरण पादुकाओं पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए पूज्य गुरुदेव के युग निर्माण आन्दोलन के प्रति अपनी गहरी आस्था व्यक्त की।

स्थानीय संगठन ने इस अवसर पर मिशन के विभिन्न आन्दोलनों में सर्वोत्तम योगदान देने वाले परिजनों का नागरिक अभिनंदन किया। टोली नायक श्री सुखदेव शर्मा ने साधना आन्दोलन के लिए स्वामी भगवानदास महाराज को, गोसंवर्धन के लिए स्वामी हरिदास महाराज को, व्यसनमुक्ति के लिए धर्मसिंह भण्डारी को, स्वावलम्बन के लिए द्वारिका प्रसाद सेमवाल को, शिक्षा के लिए मनवर सिंह भण्डारी एवं रमेश दत्त भट्ट को, पत्रकारिता के लिए सूरत सिंह रावत को और स्वतंत्रता सेनानी नत्थीसिंह कश्यप को सम्मानित किया गया।

अवतारी चेतना का आभास कराया

धमतरी (छत्तीसगढ़)

जन्म शताब्दी तीर्थयात्रा रथ के धमतरी पहुँचने पर टिंबर भवन के पास सैकड़ों लोगों द्वारा प्रथम स्वागत किया गया। वहाँ से नगर भ्रमण करते हुए यह गायत्री शक्तिपीठ पहुँची, जहाँ शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री घनश्याम देवांगन ने जनसभा को संबोधित किया।

शांतिकुंज प्रतिनिधि ने भीषण प्रतिकूलताओं के बीच जन-जन में उमड़ते नवसृजन के उत्साह को अवतार प्रक्रिया का अंग बताया। उन्होंने कहा कि राम-कृष्ण की सत्ता अपने युग में नहीं पहचानी जा सकी थी, लेकिन जिन्होंने भी उनको पहचाना और सहयोग का हाथ बढ़ाया, वे धन्य हो गये। शांतिकुंज प्रतिनिधि ने चेतन प्रभाव को अनुभव करने के लिए युग निर्माण आन्दोलन के साधना एवं अन्य रचनात्मक कार्यों में सक्रिय भागीदारी का आवाहन किया। इस अवसर पर धमतरी ब्लॉक की विभिन्न इकाइयों के सैकड़ों प्रमुख कार्यकर्त्ता उपस्थित थे। सभी ने हरिद्वार में आयोजित होने जा रहे सृजन महाकुंभ में बढ़चढ़ कर भागीदारी करने के संकल्प लिये।

शानदार संकल्प उभरे

गोला गोकर्णनाथ, खीरी लखीमपुर (उ.प्र.)

जन्म शताब्दी तीर्थयात्रा दिनांक ५ मई को गोला गोकर्णनाथ पहुँची। श्रीराम धर्मकाँटा पर प्रथम स्वागत और श्री हनुमान मंदिर पर सभा का आयोजन हुआ। टोली नायक श्री कैलाश नाथ तिवारी द्वारा जन्म शताब्दी के महत्त्व एवं योजना पर विस्तार से जानकारी दी गयी।

शांतिकुंज प्रतिनिधि ने युग निर्माण योजना को ईश्वरीय योजना बताते हुए कहा कि व्यक्ति का साहस ही उसे दिव्य शक्तियों के अनुदान-वरदान का अधिकारी बनाता है। परिवर्तन की पहली सीढ़ी आत्म परिष्कार है।

स्थानीय संगठन ने गुरु चरण पादुकाओं और शक्ति कलश की साक्षी में एक से बढ़कर एक शानदार संकल्प लिये। जन्म शताब्दी वर्ष में एक लाख स्टिकर लगाने, १६ पुस्तक मेले आयोजित करने, २४००० घरों में बलिवैश्व परंपरा आरंभ कराने, ५१ सामूहिक विवाह कराने, २४-२४ नारी जागरण एवं युवा शिविर कराने, १०८ झोला पुस्तकालय एवं ज्ञानरथ चलाने, ५० जन्म शताब्दी रैलियाँ निकालने, २० हजार विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में शामिल कराने के संकल्प लिये गये। १०८ प्रज्ञापुत्र, २००० प्रज्ञा परिजन, २००० सहयोगी सभ्य और ४१ समयदानी तैयार करने के संकल्प भी लिये गये।

गोला गोकर्णनाथ में आयोजित सभा

प्रबुद्ध युवाओं का सशक्त अभियान

४०० दिन चली ग्राम तीर्थयात्रा, ५० पुस्तक मेले आयोजित

गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)

सजल ज्ञान मंदिर विद्या विस्तार केन्द्र गोरखपुर के युवा सदस्यों के ४०० दिवसीय क्रांतिकारी अभियान-राष्ट्रजागरण ग्रामतीर्थ यात्रा एवं पुस्तक मेला का अत्यंत सफल एवं उपलब्धिपूर्ण समापन हुआ। उल्लेखनीय है कि परम पूज्य गुरुदेव की जन्मशताब्दी को ध्यान में रखते हुए प्रोफेसर और इंजीनियर स्तर के युवाओं ने गाँव-गाँव जाकर युगऋषि के विचार पहुँचाने का संकल्प लिया था। सर्वश्री सुशील कुमार, आलोक सिंह, लक्ष्मी सिंह, मंजेश पटेल, रामनिवास, संजय पाण्डेय, अर्जुन प्रसाद, राधेश्याम जी, गुलाब सिंह, रघुराज सिंह तथा मुनाराय इस अभियान में शामिल थे। २५ नवंबर २००९ से आरंभ हुई ग्रामतीर्थ यात्रा ने गोरखपुर, कुशीनगर, देवरिया, महराजगंज, बलिया जिलों के साथ बिहार और नेपाल के गाँवों में भी कार्यक्रम सम्पन्न कराये। ज्ञानरथ में पाँच कुण्डीय यज्ञ का सारा सामान, पुस्तक मेले के लिए साहित्य और वीडियो प्रोजेक्टर साथ थे। यह सारी व्यवस्थाएँ स्वजनों से कर्ज लेकर जुटाई गयी थीं।

गाँव-गाँव लगे पुस्तक मेले

इस यात्रा में विषमुक्त प्राकृतिक कृषि एवं गोपालन को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया गया। सैकड़ों विद्यालयों में युगऋषि का संदेश दिया। दल नायक श्री सुशील कुमार ने यात्रा के समापन पर कहा-इस क्रम में जीवन में जो अनुभूतियाँ एवं आध्यात्मिक उपलब्धियाँ मिलीं, उन्हें शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। असंभव से कार्य को संभव होते देख मन प्रफुल्लित है। श्रवण कुमार की तरह गुरुदेव के ज्ञान शरीर को जन-जन तक पहुँचाने में जो आनंद मिला वह अद्वितीय है।

शानदार उपलब्धियाँ

- १९००० किलोमीटर की यात्रा
- ३५०० गाँवों में हुआ जनजागरण
- १६००० दीक्षा संस्कार
- ५० स्थानों पर पुस्तक मेले
- ३६००० लोगों ने लिए वसंत पर्व २०१२ तक नियमित रूप से गायत्री उपासना करने के संकल्प
- ४५० ज्ञान प्रचारक बने
- ४००० घरों में ज्ञानमंदिर स्थापना
- २००० घरों में देवस्थापना
- २००० लोगों ने की गायत्री मंत्रलेखन साधना
- २०८ प्राणवान युवा उनके संगठन से जुड़े,
- ४० युवा मण्डलों की स्थापना हुई।

किसी का अनुग्रह स्वीकार करना अपनी स्वतंत्रता को जुए पर लगाना है। -शरण

मुख्यमंत्री जी ने लिया शांतिकुंज का आशीर्वाद

शांतिकुंज मेरा गुरुद्वारा है, पूज्य गुरुदेव से मैंने दीक्षा ली है। मेरी हर सफलता में उनकी कृपा और प्रेरणा विद्यमान है। पूज्य गुरुदेव का ध्यान करने से, उनका साहित्य पढ़ने से बड़ी शक्ति मिलती है। बिना शांतिकुंज आये मेरी यात्रा अधूरी रहती है।

- ♣ वृक्षारोपण आन्दोलन के लिए चाहा गायत्री परिवार का सहयोग।
- ♣ जल संरक्षण एवं नारी उत्कर्ष की योजनाओं की जानकारी दी।
- ♣ युवाओं को कृषि की ओर आकर्षित कर रहे हैं।

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान ने यह बात उनके शांतिकुंज आगमन के उद्देश्य के संदर्भ में पूछे जाने पर कही। वे यहाँ २९ मई को चार धाम यात्रा से पूर्व अपनी धर्मपत्नी और दोनों बच्चों के साथ यहाँ आये थे।

आद. जीजी-डॉ. साहब मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान व उनके परिवार से चर्चा करते हुए

मुख्यमंत्री जी ने एक समर्पित शिष्य-सी भाव श्रद्धा के साथ गुरुचरण पादुकाओं और अखण्ड दीप को नमन किया। तत्पश्चात् वे आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं आदरणीया शैल जीजी से मिले, आशीर्वाद लिया। आदरणीय डॉ. साहब-जीजी ने मंगल तिलक लगाकर एवं युग साहित्य भेंट कर सम्मान करते हुए उनके सुखी जीवन एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना की। पारिवारिक आत्मीयता के साथ संक्षिप्त चर्चा के बाद उन्होंने मुख्यमंत्री जी को चार धाम यात्रा के लिए भावभरी विदाई दी।

मुख्यमंत्री जी शांतिकुंज के व्यवस्थापक कार्यालय में आदरणीय डॉ. गौरीशंकर शर्मा जी, डॉ. ओ.पी. शर्मा, डॉ. बृजमोहन गौड़ आदि से मिले और प्रदेश में चल रही विकास योजनाओं पर चर्चा की। उन्होंने प्रदेश में घटते जल स्तर को ऊँचा उठाने के लिए तालाब-बावड़ियाँ बनाने, कन्याओं को मुफ्त शिक्षा के साथ साईकिल और १८ वर्ष आयु होने तक १ लाख रुपये नकद देने जैसी उनके द्वारा चलायी जा रही योजनाओं की जानकारी दी। मध्य प्रदेश में वृक्षारोपण आन्दोलन को गति देने के लिए शांतिकुंज का सहयोग चाहा। उन्होंने बताया कि वे युवाओ को कृषि के प्रति आकर्षित करने के स्वयं खेती करते हैं। मुख्यमंत्री के खेत की सब्जियाँ बाजार में बिकती हैं।

ज्ञान अनुभव और अभ्यास में उतरे, तभी उपयोगी

आदरणीय डॉ. साहब-जीजी से प्रेरणा-आशीर्वाद लेकर इंटर्नशिप पर रवाना हुए विद्यार्थी

परीक्षाएँ पास कर लेने से अच्छी नोकरी तो लग सकती है, लेकिन अर्जित ज्ञान की उपयोगिता तभी है जब वह जीवन में उतर जाये। प्राचीन काल में गुरुकुलों में विद्यार्जन कर रहे गुरुकुलों में इसीलिए सेवाकार्य अनिवार्य रूप से जुड़े होते थे। आप इंटर्नशिप पर जा रहे हैं, इसे डिग्री पाने की अनिवार्यता नहीं, सेवा का अवसर समझें। इंटर्नशिप के समय मिले अनुभव आपके जीवन भर काम आने वाले हैं।

कुलाधिपति आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं आदरणीया शैल जीजी ने दिनांक १ जून से परिवीक्षा के लिए देव संस्कृति विश्वविद्यालय से रवाना हो रहे लगभग १०० विद्यार्थियों को अपना भरा आशीर्वाद और सत्प्रेरणाएँ प्रदान करते हुए रवाना किया।

कुलाधिपति जी ने कहा कि आप जीवन के हर पल में कुछ न कुछ सीखने की आदत डालें। प्यार देना और सम्मान पचाना सीखें, कोरी भावुकता से बचें, समाज की पीड़ा को अनुभव करें और आप उसका क्या समाधान दे सकते हैं, इस विषय में चिंतन-मनन करें। आप यदि लोगों की भावनाओं को अनुभव कर सके तो इस कार्य में मिल रही तमाम कठिनाइयों में भी अनिर्वचनीय सुख की अनुभूति करेंगे।

आदरणीया शैल जीजी ने इंटर्नशिप को विद्यार्थियों की गुरु दक्षिणा बताया। उन्होंने कहा कि उम्र और परिपक्वता के अनुरू व्यक्ति को उसकी जिम्मेदारी का अनुभव भी होना चाहिए। यह एक माह की प्रव्रज्या आपको एक अलग दृष्टिकोण से समाज के दर्शन करायेगी। गाँधी जी ने देश के कोने-कोने की परिव्रज्या की, तभी उनके अंदर का महात्मा प्रकट हुआ था। आप सब में भी वह संभावनाएँ विद्यमान हैं। यदि वह जाग्रत् हो जायें तो युग निर्माण आन्दोलन तेजी से गतिशील होता जायेगा।

कुलपति डॉ. एस.पी. मिश्र ने बताया कि १ जून से देव संस्कृति विश्वविद्यालय के लगभग १०० विद्यार्थी रवाना हो रहे

आद.जीजी-डॉ. साहब इंटर्नशिप में जाने वाले बच्चों को संबोधित करते हुए

हैं। ये विद्यार्थी देहरादून, नैनीताल, उधमसिंह नगर, हरिद्वार, आगरा, बहराईच, सहारनपुर, उन्नाव, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र और छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले में सेवाएँ प्रदान करेंगे। इस अवधि में वे पर्यावरण संरक्षण, वृक्षारोपण, जल संरक्षण, स्वच्छता, विद्या विस्तार, व्यसनमुक्ति, आस्था संवर्धन जैसे आन्दोलनों को गति प्रदान करेंगे।

शताब्दी कुंभ की तैयारियाँ

शांतिकुंज में हुई अभियंताओं की गोष्ठी

२८ एवं २९ मई को शांतिकुंज में जन्म शताब्दी समारोह की पूर्व तैयारी के रूप में सिविल, मैकेनिकल, इलैक्ट्रिकल, इलैक्ट्रॉनिक्स, पी.एच.आई. एवं मीडिया विधाओं से जुड़े हुए परिजनों की कार्यशाला सम्पन्न हुई।

वर्ष २००० में सम्पन्न सृजन संकल्प विभूति महायज्ञ में जो परिजन समयदान में आये थे, उन सभी को पतों में बदलाव की वजह से आमंत्रण भेजना संभव नहीं हो सका, फिर भी बिना पत्र के फोन एवं ई-मेल के माध्यम से सूचना पाकर लगभग ४५ अभियंता परिजन इस कार्यशाला में सम्मिलित हुए। शांतिकुंज में पहले से ही सेवारत अभियंतागण भी इसमें सम्मिलित हुए।

आमंत्रित परिजनों के बीच आदरणीय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी, आदरणीय श्री गौरीशंकर जी, श्री शरद पारधी जी के व्याख्यान हुए। आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं आदरणीया शैल जीजी ने वन्दनीया माताजी के भेंट-परामर्श कक्ष में उन सबसे भेंट की तथा उन्हें जन्म शताब्दी समारोह की गरिमा का भान कराया।

२८ मई के अपराह्न में आये हुए अभियंताओं को दो बसों में बैठाकर आयोजन के लिए निर्धारित स्थलों का भ्रमण कराया गया।

विदाई के पूर्व सभी अभियंता परिजनों ने समयदान पर अपने पहुँचने की पुष्टि की तथा अपनी सेवा के क्षेत्रों के प्रति प्राथमिकता बतायी।

पारस (गायत्री) के स्पर्श ने बदल दिया जीवन

अरनोद, प्रतापगढ़ (राजस्थान) : सुंदरलाल के जीवन में हुआ परिजन क्षेत्र में एक चमत्कारिक घटना के रूप में देखा जा रहा है। अरनोद में ऑटो इलैक्ट्रिकल मोटर रीवाइंडिंग, सेल्फ डायनामो की दुकान करने वाले सुंदरलाल अब वहाँ 'राम' के नाम से जाने जाते हैं।

सुंदरलाल वह व्यक्ति है जो शराब के नशे में दिन-रात धुत रहते थे। मारपीट की घटनाओं के कारण पत्नी और बच्चों का जीवन नरक हो गया था। लेकिन सन् २००५ में डुंगरपुर में आयोजित १०८ कुण्डीय गायत्री यज्ञ में दीक्षा लेने के बाद उनके जीवन में ऐसा परिवर्तन आया कि आज वे जहाँ पहुँच जाते हैं, वहाँ लोग बीड़ी, तंबाकू, गुटखा, शराब आदि का सेवन करना पाप समझते हैं। उन्होंने वसंत पर्व २०१० में ११०० लोगों को व्यसनमुक्त करने का संकल्प लिया और अन्न त्याग दिया। उनका कहना है कि वे अपना संकल्प पूरा करने के बाद ही अन्न ग्रहण करेंगे। अब तक वे ५५ लोगों को व्यसनमुक्त करा चुके हैं।

११०० लोगों को नशामुक्त कर ही ग्रहण करेंगे अन्न

इस परिवर्तन से गद्गद राम (पूर्व नाम सुंदरलाल) की पत्नी का कहना है कि वे पहले ज्यादा कमाते थे, लेकिन पूरा घर बहुत दु:खी था। अब कम कमाई में भी भरपूर सुख और अथाह सम्मान मिल रहा है। अब वे परिवार पालन के लिए सीमित समय देकर शेष सारा समय मिशन के प्रचार और समाज कल्याण के लिए ही लगाते हैं। शांतिकुंज में एक मासीय सत्र किया है। जौ की रोटी और छाछ पर ४० दिन का अनुष्ठान किया है।

राम ने अपनी गुरुसत्ता की जन्म शताब्दी पर उन्हें विशिष्ट श्रद्धांजलि देते हुए अपने क्षेत्र में ही तीन माह का समयदान किया। समयदान की पूर्णाहुति के दिन उनकी हीरोहॉण्डा मोटरबाईक की लॉटरी लगी, जो बाइक मिली संयोग से उसका रंग भी पीला ही है। उन्होंने इसे गुरुसत्ता का प्रसाद माना, उस पर गायत्री मंत्रादि लिखाया, साउण्ड सेट लगवाया और अब इसका प्रयोग मात्र मिशन के कामों के लिए ही करते हैं।

वे बताते हैं कि एक बार अपनी बाइक में पेट्रोल समाप्तप्राय: हो जाने की बात भूल गये। पेट्रोल डलवाया ही नहीं और मिशन के किसी आवश्यक काम के लिए चल दिये। ३० किमी जाने पर ध्यान आया। पेट्रोल की टंकी बिलकुल खाली थी। वे नहीं जानते कि बाइक कैसे चली? कहते हैं-सब गुरुकृपा है। गुरुसत्ता का यह वरदहस्त ही उन्हें मिशन के कार्यों के लिए मर-मिटने के लिए प्रेरित करता रहता है।

१ जुलाई ११ से आरंभ हो रहे हैं

नये त्रैमासिक प्रशिक्षण शिविर

हथकरघा प्रशिक्षण सत्र

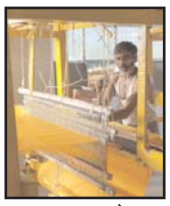

भारत सरकार के खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग के सहयोग से शांतिकुंज -देसंविवि में चल रहे 'खादी कताई और बुनाई' का दूसरा त्रैमासिक प्रशिक्षण सत्र 01 जुलाई 2011 से आरंभ हो रहा है। जो इसमें भाग लेना चाहते हैं, वे अविलंब पत्र, फैक्स (01334-260866), फोन-(01334-260602, विस्तार 103, 104) से संपर्क करें। स्थान सीमित हैं।

संगीत प्रशिक्षण सत्र

शांतिकुंज में चल रही त्रैमासिक संगीत प्रशिक्षण श्रृंखला का अगला सत्र 01 जुलाई 2011 से आरंभ होगा। इसमें संगीतमय कथा शैली का अभ्यास कराया जाता है। इस शिविर में वे ही भाग ले सकते हैं, जो-

- ➲ शांतिकुंज में एक मासीय, परिव्राजक सत्र कर चुके हैं।
- ➲ ढपली, हारमोनियम, तबला या नाल की प्रारंभिक जानकारी रखते हैं।
- ➲ क्षेत्रों, शक्तिपीठों या टोलियों में संगीत के क्षेत्र में समयदान देते हैं।
- ➲ जिनकी आयु 20 से 45 वर्ष के बीच है।

शिविर आरंभ होने के दो दिन पूर्व शांतिकुंज आकर प्रारंभिक योग्यता की परीक्षा पास करनी होगी। संगीत विभाग द्वारा चयनित योग्य प्रशिक्षणार्थियों को ही प्रवेश दिया जायेगा। अपने आने की सूचना शांतिकुंज के संगीत विभाग फोन नं. 01334-260602 एक्स० 190 को अविलम्ब दे दें, तो सुविधा होगी।

जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है। - मनु स्मृति

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा और गायत्री विद्यापीठ द्वारा आयोजित किये गये शिक्षा-शिविर

राष्ट्रीय प्रावीण्य छात्र शिक्षण शिविर

शांतिकुंज में २० से २३ मई की तारीखों में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का 'राष्ट्रीय प्रावीण्य छात्र शिक्षण शिविर' आयोजित हुआ। इसमें राज्य स्तरीय प्रावीण्य सूची में कक्षावार प्रथम तीन स्थान प्राप्त विद्यार्थियों ने भाग लिया। आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं शैल जीजी ने इन छात्रों से बातचीत करते हुए कहा कि देश को आज ऐसे सच्चे, ईमानदार, राष्ट्रनिष्ठ व्यक्तियों की आवश्यकता है। आप युग निर्माण आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी करते हुए अपने व्यक्तित्व को निखारें और समाज के समक्ष अपना आदर्श प्रस्तुत करें। पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी का जीवन दर्शन इस कार्य में सतत आपका मार्ग प्रशस्त करता रहेगा।

शिविर का शुभारंभ देसंविवि के कुलपति डॉ. एस.पी. मिश्र द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रभारी एच.पी. सिंह ने भारतीय संस्कृति की गौरव-गरिमा का चित्रण करने के साथ शिविर के उद्देश्य बताये।

शांतिकुंज के वरिष्ठ प्रतिनिधि कपिल केसरी जी, कालीचरण शर्मा, डॉ. ओ.पी. शर्मा, आर.के. नायक, श्रीमती प्रेरणा वाजपेयी आदि ने बच्चों के व्यावहारिक जीवन से जुड़े अनेक विषयों पर मार्मिक वक्तव्य दिये। भासंज्ञाप. प्रकोष्ठ प्रभारी श्री आर.के. नायक और श्री पी.डी. गुप्ता ने विद्यार्थियों को शांतिकुंज की विद्या विस्तार योजनाओं से अवगत कराया। इस क्रम में वेषभूषा, स्वच्छता, व्यसन, उपासना, साधना, सेवा, संयम, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा, परीक्षाओं में रखी जाने वाली सावधानियाँ आदि विषयों पर चर्चा हुई।

सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं क्विज़ प्रतियोगिता में प्रतिभागी बच्चों की भागीदारी बड़ी रोचक और उत्साहवर्धक रही। दिल्ली की कुमारी ज्योति ने भ्रूणहत्या पर स्वरचित कविता सुनाकर सभी को भावविभोर कर दिया। क्विज प्रतियोगिता में प्रताप दल प्रथम, शिवाजी दल द्वितीय, सुभाष दल तृतीय और विवेकानंद दल चतुर्थ स्थान पर रहा।

प्रांतीय वरीयता प्राप्त विद्यार्थी और शांतिकुंज के भासंज्ञाप. प्रकोष्ठ के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता

आदरणीय श्री गौरीशंकर शर्मा जी ने शिविर के समापन सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि व्यक्ति की वास्तविक पहचान उसके पद, धन-संपत्ति आदि से नहीं, उसके चरित्र से होती है। स्कूली पढ़ाई के साथ यदि विद्यार्थी गुणवान बनने का प्रयास भी करें, सही मायने में तभी उसकी शिक्षा सार्थक है। आप जिन गुणों से प्रभावित हैं, छोटे-छोटे संकल्प लेकर उन्हें जीवन में उतारने का अभ्यास करें, यही शांतिकुंज की प्रेरणा है।

समापन सत्र में सभी बच्चों को प्रमाण पत्र, पूज्य आचार्य जी द्वारा लिखित साहित्य एवं अन्य उपयोगी साहित्य भेंट कर सम्मानित किया गया। शिविर का संचालन श्री मोहनसिंह भदौरिया, श्री नरेन्द्र ठाकुर एवं श्री अतुल द्विवेदी ने किया।

शिक्षक पुनर्बोधन कार्यशाला

विद्यालय वह पवित्र स्थान है, जहाँ विद्यार्थी का पुनर्जन्म होता है। बच्चे को जन्म तो माता-पिता देते हैं, लेकिन उसके जीवन की दिशा-धारा तय करने का बहुत बड़ा दायित्व शिक्षकों पर होता है।

आदरणीय डॉ. साहब गायत्री विद्यापीठ के शिक्षकों को संबोधित करते हुए

यह विचार आदरणीय डॉ. प्रणव जी ने गायत्री विद्यापीठ, शांतिकुंज में आरंभ हुई 'शिक्षक पुनर्बोधन कार्यशाला' के उद्घाटन सत्र में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि समाज और राष्ट्र के प्रति अपने उत्तरदायित्वों का बोध करते हुए अपने विद्यार्थियों को सुयोग्य नागरिक बनाना शिक्षक का धर्म है।

कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में उपस्थित देसंविवि के कुलपति डॉ. एस.पी. मिश्रा ने 'छात्रों में उद्यमिता का विकास' विषय पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि उद्यमिता एक ऐसा गुण है, जिसके होने पर वह किसी भी क्षेत्र में अपनी प्रगति का मार्ग खोज ही लेगा। उद्यमी विद्यार्थी हर क्षेत्र में अपना कॅरियर बना सकता है।

इससे पूर्व कुलाधिपति जी ने दीप प्रज्वलन के साथ कार्यशाला का उद्घाटन किया। इसमें विद्यापीठ के ४० शिक्षकों ने भाग लिया। गायत्री विद्यापीठ के प्रधानाचार्य श्री कैलाश महाजन ने अपने स्वागत उद्बोधन में विद्यालय की उपलब्धियों और भावी संकल्पों की जानकारी दी।

कार्यशाला में प्रतिदिन विद्वान शिक्षाविदों ने शिक्षकों को मार्गदर्शन दिया। इनमें उत्तराखण्ड के शिक्षा निदेशक श्री चंद्र सिंह ग्वाल, संयुक्त निदेशक श्री नरेन्द्र बहुगुणा, जिला शिक्षा अधिकारी श्री अनिल भोज, बी.एन. ...खण्डी इंटर कॉलेज कानपुर के डॉ. अंगद सिंह प्रमुख थे। अंतिम दिन ३० मई को सत्र के समापन के अवसर पर आदरणीय श्री गौरीशंकर शर्मा जी ने कहा कि शिक्षकों से समाज को बहुत आशाएँ हैं। विद्यालयों में शिक्षा के साथ विद्या के समावेश की आज महती आवश्यकता है।

राष्ट्रीय शिक्षक गरिमा बोध शिविर

शांतिकुंज में शिक्षाधिकारियों, प्राचार्यों एवं अध्यापकों का 'राष्ट्रीय शिक्षक गरिमा बोध शिविर' दिनांक २५ एवं २६ मई की तारीखों में सम्पन्न हुआ। शांतिकुंज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री कपिल केसरी जी ने इसका उद्घाटन करते हुए कहा कि उज्ज्वल भविष्य की आस लगाये बैठे लाखों-करोड़ों लोग शिक्षकों की ओर निहार रहे हैं। उन्हीं में वह क्षमता है, जो राष्ट्र को सच्चरित्र, ईमानदार, राष्ट्रनिष्ठ नायक, अधिकारी, सेवक प्रदान कर सकते हैं।

आदरणीय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी ने कहा कि आज के शिक्षक को नयी दृष्टि की आवश्यकता है। वे यदि अपना धर्म ईमानदारी से निभायें तो उत्कृष्ट लोकसेवी की भूमिका निभा सकते हैं। शिक्षक वह प्रतिभा है जो वशिष्ठ और संदीपन के रूप में राम और कृष्ण को भगवान बना सकती है।

इस शिविर में उत्तर प्रदेश, पंजाब, मध्य प्रदेश के २५० प्राचार्यों, शिक्षकों ने भाग लिया। डॉ. बृजमोहन गौड़, श्री कालीचरण शर्मा ने भी शिविरार्थियों को शांतिकुंज की विचारधारा से अवगत कराया। श्री नरेन्द्र ठाकुर ने 'युग निर्माण योजना शांतिकुंज' जैसी भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के कार्यक्रमों को लागू करने वाली विविध शिक्षा योजनाओं की जानकारी दी।

भासंज्ञाप प्रकोष्ठ प्रभारी श्री आर.के. नायक ने इस वर्ष की विधि-व्यवस्थाओं एवं उपलब्धियों की चर्चा की। डॉ. पी.डी. गुप्ता ने शिविर का संचालन किया।

कानपुर जिले का अभिनंदन

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं आदरणीया शैल जीजी ने इस अवसर पर कानपुर जिले में सवा लाख विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में शामिल कराने के उपलक्ष्य में कानपुर जिला प्रतिनिधियों को ट्रॉफी एवं सम्मान पत्र प्रदान करते हुए वहाँ के सभी प्राचार्यों-परिजनों का अभिनंदन एवं उत्साह वर्धन किया। प्राचार्य श्री सूर्यकांत मिश्र, डॉ. वीरेन्द्र गुप्ता, श्री बी.आर. गुप्ता, जबलपुर के प्राचार्य श्री सुरेन्द्र कुमार त्रिपाठी, घनश्याम बर्मन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए प्रत्येक तहसील स्तर पर शिक्षक गरिमा शिविर आयोजित करने और नैतिक शिक्षा अभियान को अधिक प्रभावशाली बनाने के संकल्प व्यक्त किये।

रेल अधिकारियों की व्यक्तित्व परिष्कार एवं उन्नयन कार्यशाला

उत्तर मध्य रेलवे इलाहाबाद जोन ने २३ से २७ मई की तारीखों में शांतिकुंज में 'प्रतिभा उन्नयन एवं परिष्कार' कार्यशाला का आयोजन किया। आगरा, झाँसी एवं इलाहाबाद डिवीजन के लगभग ५० अधिकारियों ने भाग लिया। श्री आलोक गुप्ता-महाप्रबंधक उ.म. रेलवे इलाहाबाद ने शांतिकुंज में इस कार्यशाला के आयोजन पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि इस दिव्य भूमि के दिव्य वातावरण का सान्निध्य ही अपने आप में कार्यशाला की सफलता सुनिश्चित करने वाला है।

इस कार्यशाला को रेल अधिकारियों की ओर से अरुण बिजवार-सीनियर फाइनेंस एण्ड एकाउण्ट ऑफिसर, श्री ए.के. मिश्रा-मुख्य अभियंता, श्री एच.एस. राना- उप सतर्कता अधिकारी आदि ने संबोधित किया। वक्ताओं ने कहा कि कर्मचारियों की नैतिकता और समाजनिष्ठा अंततोगत्वा उनकी कार्यदक्षता में परिणत होती है। रेलवे जैसे सामाजिक प्रतिष्ठानों की सेवा बेहतर तभी हो सकती है जब व्यक्ति को अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों का बोध हो और उनको निभाने का उत्साह उभरे। शांतिकुंज के कण-कण में यह प्रेरणा और उत्साह दिखाई देता है।

कार्यशाला में सम्मिलित हुए रेल अधिकारीगण शांतिकुंज के सत्संग भवन में

कार्यशाला में भाग ले रहे अधिकारियों ने अपनी लिखित प्रतिक्रियाओं में इस तथ्य की पुष्टि की। श्री रशीद खाँ-सीनियर सैक्शन इंजीनियर ने लिखा-यहाँ की प्रेरणाओं को यदि मैं अपने जीवन में उतार सका तो मेरा यहाँ आना सार्थक हो जायेगा। प्राय: सभी ने परिवार सहित आकर शिक्षण लेने की आवश्यकता बतायी और आने के भाव व्यक्त किये।

शांतिकुंज के ओर से यहाँ के वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं-आदरणीय श्री गौरीशंकर शर्मा जी, डॉ. बृजमोहन गौड़, श्री कालीचरण शर्मा आदि ने संबोधित किया। अभियंता श्री एल.पी. साहू और श्री राकेश जायसवाल ने कार्यशाला का संयोजन किया।

देसंविवि की छात्रा अर्चना कुमारी ने अंतर्राष्ट्रीय योग प्रतियोगिता में लहराया परचम

भारत, चीन, मलेशिया, थाईलैण्ड, हांगकांग के 125 प्रतियोगी शामिल हुए

योग फेडरेशन ऑफ एशिया द्वारा हांगकांग में आयोजित द्वितीय एशिया कप योग प्रतियोगिता-२०१० में भाग लेते हुए देसंविवि की पूर्व छात्रा कुमारी अर्चना ने ओलम्पिक और आर्टिस्टिक राउण्ड में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए दो स्वर्ण पदक अर्जित किये। उन्हें इस उपलक्ष्य में मुख्य अतिथि ली जैनी और योग फेडरेशन ऑफ एशिया के अध्यक्ष लोकनाथ ने सम्मानित किया। उल्लेखनीय है कि इस प्रतियोगिता में भारत, चीन, थाईलैण्ड, मलेशिया, हांगकांग के १२५ प्रतियोगियों ने भाग लिया था।

कु.अर्चना राँची निवासी श्री ललन प्रसाद एवं आशा देवी की सुपुत्री है। इन दिनों वह रायगड़ा के इंजीनियरिंग कॉलेज में योग प्रवक्ता है। कुलाधिपति आद. डॉ. साहब, आद. जीजी सहित समस्त विवि. परिवार ने अपने विवि. और देवभूमि उत्तराखण्ड का नाम रोशन करने वाली कु.अर्चना का हार्दिक अभिनंदन किया। कुलाधिपति जी ने कहा कि देसंविवि के विद्यार्थी हर क्षेत्र में ऊँचाईयाँ छू रहे हैं।

दुष्कर्म स्वतः ही एक अभिशाप है, जो कर्त्ता को भस्म किये बिना नहीं रहता।

दक्षिण अफ्रीका की मनीषा के मन-मस्तिष्क में प्रवाहित हुई भाव संवेदनाएँ

अपने बच्चों को समृद्धि के साथ उत्तम संस्कार देना सीखना हो तो भूलाभाई से सीखें। पूरा परिवार एकजुट है, गायत्री उपासक है और अपने देश से हजारों मील दूर अफ्रीका में होते हुए भी अपनी संस्कृति को भूला नहीं है। श्री भूलाभाई ने कठिन समय देखा है। इस समय में भी उन्होंने गुरुभक्ति का आदर्श प्रस्तुत किया है। उनके त्याग, समर्पण का प्रभाव ही है यह कार्यक्रम।

शांतिकुंज की प्राण चेतना के संवाहक आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने अफ्रीका में गायत्री परिवार की धुरी माने जाने वाले श्री भूलाभाई छीता के जन्म दिवस संस्कार और उनकी नये फैक्ट्री के उपलक्ष्य में आयोजित ५१ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में यह विचार व्यक्त किये। उनके जन्म दिवस १५ मई के उपलक्ष्य में आदरणीया शैल जीजी एवं आदरणीय डॉ. साहब की ओर से उन्हें गुजराती एवं अंग्रेजी में लिखा गया विशेष सम्मान पत्र, श्रीफल, दुपट्टा, माला, मिठाई एवं युगसाहित्य भेंटकर श्री भूलाभाई छीता को सम्मानित किया गया।

५१ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन गायत्री केनिंग फैक्ट्री ३ पावर स्ट्रीट जर्मिस्टन गाउटेंग में हुआ। लगभग २००० लोगों ने इसमें भाग लिया। यज्ञ की विशेष व्यवस्थाएँ देखते ही बनती थीं। विशेष मंच, विशेष यज्ञकुंड, विशेष स्टूल आदि सब कुछ विशेष था, आकर्षक था। मंगलाचरण के साथ यज्ञ आरंभ हुआ। यज्ञाहुतियों के बाद श्री भूलाभाई की नयी फैक्ट्री के मुख्य भवन 'नरेश' का शांतिकुंज प्रतिनिधि ने उद्घाटन किया। इसके बाद उन्होंने हजारों लोगों की तालियों की गड़गड़ाहट के बीच शीतल पेय के स्टील केन प्रति घंटे हजारों की संख्या में बनाने वाली ऑटोमेटिक मशीन का बटन दबाकर शुभारंभ किया।

आदरणीय डॉ. साहब ने यज्ञ के समय अपने संदेश में कहा कि पूज्य गुरुदेव की जन्म शताब्दी का यह वर्ष बड़ा ही दुर्लभ है। अभी तक भूलाभाई की पीढ़ी ने अफ्रीका में मिशन के विस्तार के लिये जो कार्य किये हैं, युवा पीढ़ी को उसे कई गुना गति देनी होगी।

लीनेशिया, दक्षिण अफ्रीका में यज्ञ करते अतिविशिष्ट महानुभाव और दायें 'गायत्री केनिंग' फैक्टरी का उद्घाटन करते आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

शांतिकुंज से आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, प्रो. प्रमोद भटनागर, श्री राजकुमार वैष्णव एवं श्री ओंकार पाटीदार की टोली दक्षिण अफ्रीका के प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री भूलाभाई छीता के विशेष आमंत्रण पर १३ से १५ मई के संक्षिप्त प्रवास पर दक्षिण अफ्रीका पहुँची। श्री ईश्वरी भाई, श्री अनिल देसाई, श्री सतीश भाई ने ओटोम्बो एअरपोर्ट पर उनका भावभरा स्वागत किया। उनके इस प्रवास से जन्म शताब्दी के विशेष उत्साह के साथ युग चेतना विस्तार के लिए सक्रिय परिजनों में नये उत्साह का संचार हुआ।

१४ मई को श्री ईश्वरभाई के निवास पर दीपयज्ञ के साथ स्वागत गोष्ठी आयोजित हुई। युग संगीत के साथ परस्पर आत्मीयता संवर्धन प्रधान गोष्ठी से परिजन गद्‌गद हो गये। उसी दिन शाम को श्री जयकिशन रंगील दाया के निवास पर भजन संध्या के साथ विशेष उद्‌बोधन का क्रम रहा।

श्री भूलाभाई के उद्‌गार

मुझ पर, मेरे परिवार पर परम पूज्य गुरुदेव-परम वंदनीया माताजी की विशेष कृपा रही है। मैं उनका आशीर्वाद हर पल अनुभव करता हूँ। गुरुदेव-माताजी के कहने पर मैं अफ्रीका आया और व्यापार प्रारंभ किया था। आज मेरे पास जो कुछ है, सब उन्हीं का दिया है। वही स्नेह-आशीर्वाद आज श्रद्धेय डॉ. साहब, श्रद्धेया जीजी से मुझे मिल रहा है।

श्री भूलाभाई छीता अफ्रीका के प्रतिष्ठित उद्योग गोल्डन इरा ग्रुप के प्रमुख हैं। अपने तीनों बेटे सहित वे न्यू इरा पैकेजिंग, न्यू इरा लेबल, गोल्डन इरा प्रिंटिंग एण्ड पैकेजिंग, न्यू इरा प्लास्टिक, न्यू इरा पेपरवक्स एवं वैक्स पैक आदि कंपनियाँ चलाते हैं। गायत्री केनिंग नामक नयी फैक्ट्री का उद्घाटन करने उन्होंने आदरणीय डॉ. प्रणव जी को विशेष रूप से शांतिकुंज से आमंत्रित किया था।

श्री भूलाभाई छीता आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी से सपत्नीक अभिनंदन पत्र ग्रहण करते हुए (बायें) और अपने भावोद्‌गार व्यक्त करते हुए (दायें)

गायत्री आश्रम, लीनेशिया में कार्यकर्त्ता गोष्ठी

१५ मई को मुख्य कार्यक्रम के बाद आदरणीय डॉ. साहब और श्री राजकुमार वैष्णव की टोली गायत्री आश्रम पहुँची। वहाँ डरबन, प्रिटोरिया, केपटाउन, जोहान्सबर्ग, लीनेशिया आदि से आये लगभग ५०० कर्मठ परिजनों की गोष्ठी आयोजित हुई। आदरणीय डॉ. साहब ने जन्म शताब्दी के कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए उनसे कहा कि यह १०० वर्षों बाद आने वाला दुर्लभ सुयोग है। यहाँ पूज्य गुरुदेव के विचारों का भरपूर विस्तार हुआ है, लेकिन जन्म शताब्दी वर्ष में विचार क्रांति अभियान को हजार गुना गति देने की आवश्यकता है। हमने पूज्य गुरुदेव से जो पाया है उससे हजार गुना समाज को लौटाने का प्रयास हमें अपने तन, मन, धन से करना चाहिए।

गायत्री आश्रम में शांतिकुंज प्रतिनिधियों के साथ श्री भूलाभाई छीता

गायत्री आश्रम लीनेशिया के संचालन के लिए श्री भूलाभाई के स्थान पर सर्वसम्मति से उनके सुपुत्र श्री किशोरभाई छीता का नाम प्रस्तावित किया गया। श्री किशोरभाई ने भावभरे हृदय से इसे स्वीकार करते हुए पूज्य पिताश्री के कार्यों को सम्पूर्ण अफ्रीका में फैलाने का संकल्प दोहराया।

युवाओं का नया संगठन

स्थानीय युवकों की आकांक्षा पर लगभग ५० युवकों की अलग गोष्ठी ली गयी। उन्हें जीवन साधना के बहुमूल्य बताते हुए उनका सतत अभ्यास करने की प्रेरणा दी गयी। आदरणीय डॉ. साहब की प्रेरणा से श्री जावीराव के नेतृत्व में सभी ५० लोगों का नया संगठन 'डिवाइन इंडिया यूथ एसोसिएशन, साउथ अफ्रीका' का गठन किया गया। गायत्री आश्रम के कार्यकर्त्ता सम्मेलन में सर्वश्री चेतन हीरा, चेतन शुक्ला, रमेश भाई, मनोज कुमार, उदय काला, दिलीप डाह्याभाई, बच्चूभाई एम. देसाई और शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री जयंतीभाई एवं वासंती बेन की विशेष उपस्थिति थी।

युग निर्माण आन्दोलन और शताब्दी महाकुंभ के लिए उत्साहित हैं सहारा ग्रुप प्रमुख श्री अतुल गुप्ता

अफ्रीका के अतिविशिष्ट भारतीयों में से एक सहारा ग्रुप के प्रमुख श्री अतुल गुप्ता ने १४ मई को आदरणीय डॉ. साहब को दोपहर कालीन भोजन पर आमंत्रित किया था। लगभग ३ घंटे चली वार्ता में वे मिशन के आपदा प्रबंधन और अन्यान्य रचनात्मक कामों की जानकारी पाकर बहुत प्रभावित हुए। अपने समाचार पत्र 'द न्यू एज' में पूज्य गुरुदेव के विचार और गायत्री परिवार के रचनात्मक कार्यों को नियमित रूप से प्रकाशित करने का उत्साह उन्होंने व्यक्त किया।

परम पूज्य गुरुदेव की जन्म शताब्दी के संदर्भ में एक चार्टर्ड प्लेन परिजनों के लिए रियायती दर पर भेजने और स्वयं भी सपरिवार शांतिकुंज आने पर सहमति उन्होंने व्यक्त की। वे दक्षिण अफ्रीका के गायत्री परिवार ट्रस्ट में शामिल होंगे और पूज्य गुरुदेव के साहित्य को प्रमुखता के साथ अफ्रीका में प्रचारित करेंगे, ऐसा आश्वासन उन्होंने दिया।

आद.डॉ. प्रणव जी श्री अतुल गुप्ता जी को एलबम दिखाते हुए

श्री अतुल गुप्ता अपने दोनों भाई श्री अजय गुप्ता और श्री राजेश गुप्ता के साथ मिलकर अफ्रीका में बहुत बड़ा कारोबार कर रहे हैं। उनकी सोने और यूरेनियम की खानों में १० हजार से अधिक अफ्रीकी लोग काम करते हैं। वे दक्षिण अफ्रीका में तीन विशाल स्टेडियम और १० चार्टर्ड प्लेन के मालिक हैं। इस समस्त वैभव को वे माँ गायत्री का आशीर्वाद मानते हैं।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी युग चेतना ट्रस्ट शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा सेंचुरी ऑफसेट प्रिंटर्स,ऋषिकेश में मुद्रित। संपादक - वीरेश्वर उपाध्याय, पता:- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तरा.) पिन 249411. फोन- (01334) 260602, 261955 फैक्स - 01334-260866

सदस्यता, पूछताछ आदि के लिए फोन नम्बर - 09258369725, 01334-260602 एक्सटेंशन 167 से प्रात: 8 से सायं 5 के बीचे संपर्क करें।

RNI-NO.38653/80
R.No.UA/DO/16/2009-11
LICENCE TO POST
W.O. PREPAYMENT
vide No. WPP/04/05
RENEWED UP TO 2011